खंडः XIII अंकः 3 व 4
मार्च-अप्रैल, 2001

VISHWA NIRMALA DHARMA
UNIVERSAL PURE RELIGION

चैतन्य लहरी

कोई सहजयोगी यदि अपनी ही समस्याओं से घिरा हुआ है तो वह बिल्कुल भी सहजयोगी नहीं है। आप अन्य लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए हैं केवल अपनी समस्याओं का नहीं और न ही ये कहते फिरने के लिए कि मेरी ये समस्या है।

श्री कृष्ण पूजा (20.8.2000)

इस अंक में

1.	गुड़ी पड़वा पूजा – 5.4.2000	1
2.	भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी सम्मेलन–17.4.2000	11
3.	सहजयोगियों को भूकम्प का पूर्वाभास	25
3.	श्री कृष्ण पूजा – 20.8.2000	28
4.	सहस्रार चक्र – 4.2.83	43
5.	संक्रान्ति पूजा – प्रतिष्ठान – 2001	60

मुद्रक एवं प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162ए मुनीरका विहार
नई दिल्ली – 110067

गुड़ी पड़वा पूजा

(5.4.2000 नोयडा भवन)

परम् पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

अपने यहाँ हिन्दुस्तान में देवी के दो नवरात्र माने जाते हैं। ये चैत्र नवरात्र जिसमें आज का दिन जो शैल पुत्री के अवतरण का है। शैल पुत्री माने जब उन्होंने हिमालय में जन्म लिया था इसलिए उनको शैल पुत्री कहते हैं और फिर उसमें और भी उनके नाम हैं। लेकिन शैल पुत्री की विशेषता ये है कि उनका प्रथम जन्म शैल पुत्री के रूप है। तो हिमालय की उस ठण्ड में देवी का जन्म हुआ और जो कुछ भी उन्हें करना था वो वही–शैल पुत्री ने किया। लेकिन आगे की कहानी तो आपको मालूम ही है कि दक्ष ने जो हवन बनाया था, उसमें उन्होंने शिवजी को आमन्त्रण नहीं दिया ये शिवजी की पत्नी थीं। तो फिर देवी ने उनको सती कह दिया तब सती हुई थीं। उन्होंने जाकर के उस हवन कुण्ड में अग्नि में अपनी आहुति दे दी, तब शिवजी आए और उनके शरीर को उठाकर निकले। तो अनेक जगह उनके शरीर के टुकड़े गिर गए और उस जगह हम लोग मानते हैं कि देवी की शक्ति है, जैसे विंध्याचल में है हर जगह। तो उनकी शक्ति वहाँ विचरण करती है ऐसा कहते हैं। और वो जो शक्ति थी वो किसी भी चीज को पवित्र कर देती थी। इतनी संहारक थी। ये **जो सातवीं शक्ति** है उसे संहारक शक्ति कहते हैं। उसके बाद संहारक शक्ति आई Right Side में चली गई इसी Right Side में सावित्री, गायत्री आदि हैं। पर संहारक शक्ति का जो प्रादुर्भाव हुआ मतलब एक दिशा Left में गई एक दिशा Right में गई और जो संहारक शक्ति है वो Centre में चली गई। उसमें आप देखते हैं कि देवी के अनेक रूप Heart चक्र में हैं, जैसे दुर्गा है और भी जो उनके रूप हैं जिससे उन्होंने संहार किया। वो हृदय पर विराजमान हैं। हृदय चक्र में, हमारे हृदय चक्र में वो विराजती हैं। तो इस हृदय चक्र की एक शक्ति तो ये है ही कि कोई आपको परेशान करे या आप पर आघात करे या आपको दुविधा में डाल दे तो वो जो शक्ति है, हृदय में, वो आपका Protection करेगी और जो आपको सताएगा उसका संहार करेगी। तो वहाँ पर सबसे जो शक्ति का प्रादुर्भाव है या सबसे ज्यादा इसका असर है वो है कुण्डलिनी का वहाँ पर आना। जब कुण्डलिनी हृदय चक्र पर आती है, क्योंकि कुण्डलिनी जगदम्बा शक्ति है, अम्बा, इसलिए जब वो आती है तब उसकी शक्ति और बढ़

जाती है। तो जब मनुष्य सहजयोग को प्राप्त होता है और ये शक्ति कुण्डलिनी के जागरण से उसके हृदय में स्थित होती है तो वो पूरी तरह से आपको सम्भालती है। आपका रक्षण करती है पूरी तरह से। आपका बाल भी नहीं बाँका हो सकता। पर उसको हृदय में रखना चाहिए। माँ को हृदय में रखना चाहिए। ये माँ की शक्ति है, मातृत्व की शक्ति। और मातृत्व शक्ति ऐसी है कि वो अपने बच्चों को हमेशा संरक्षित रखती है, हमेशा संरक्षण करती है। सो इसीलिए कि जब कभी हम लोग परेशान होते हैं तो Medical Terminology ने ऐसा कहा है कि यहाँ पर जो हड्डी है वो हिलने लग जाती है और उससे जो चारों तरफ फैले हुए हमारे Anti Bodies हैं, जिनको हमारी भाषा में तो हम गण कहेंगे, उन गणों को खबर आ जाती है और वो फौरन तैयार हो जाते हैं। तो गणों की भी वो महाराज्ञी हैं। उन्हीं के आधार पर, उन्हीं की आज्ञा पर वो चलते हैं। इन लोगों, में जैसे गणेश और देवी में कोई कभी भी झगड़ा होने का सवाल ही नहीं आता। वैमनस्य होने का सवाल ही नहीं आता। वो दोनों ही शक्ति मानों जैसे एकाकारिता। तो गणेश उनके बेटे हैं और वो उनकी माँ। तो जो लोग गणेश जी को मानते हैं और जिन्होंने प्राप्त किया है गणेश जी को सहज में भी उनको वो बिल्कुल अपने बच्चे जैसे सम्भालती हैं। पग–पग पर हर जगह उनको देखती हैं क्योंकि वो माँ हैं और आप गणेश हैं। पर आपके गणेश निर्मल होने चाहिएं। गर गणेश में गड़बड़ हैं तो फिर उनको सही करना चाहिए। इस प्रकार नाना–विध उनकी क्रियाएं हैं। पर आज की विशेषता ये है कि कहते हैं कि सर्वप्रथम उन्होंने शैल पुत्री के नाम से जन्म लिया और ये बात सत्य ही होगी। लेकिन उससे पहले जब आदिशक्ति इस संसार में आईं तो एक गाय के रूप में उन्होंने जन्म लिया। मतलब परम चैतन्य की जो बस्ती है उसमें उन्होंने अवतरण लिया और वहाँ एक गाय बनकर रहीं। खास बात ये है कि वहाँ गोकुल पहले बना और वहाँ ये गाय रही। हरेक चीज़ पहले बनी और उसका प्रतिबिम्ब (Reflection) हमारे अन्दर है, जैसे सदाशिव हुए तो उनसे शिव बन गए। सबके ऐसे Reflections आए हैं; उसी प्रकार देवी का भी है। सो देवी का प्रादुर्भाव जो हुआ वो तो पहले जब जन्म लिया मनुष्य रूप में तो शैल पुत्री है। इसलिए आज का बड़ा महात्म्य है। लेकिन उस दशा में, जहाँ पर मैं बता रही हूँ, जिसको कि आप कहते हैं परम चैतन्य कि जो व्यवस्था है, स्वर्ग कहिए, चाहे जो भी कहिए उसमें उन्होंने आदिशक्ति के नाम से जन्म लिया और वो एक गाय के स्वरूप में थीं। इसलिए हम लोग गाय को नहीं मारते क्योंकि वो माँ हैं। यहाँ कि गाय में और विदेश की गाय में बहुत फर्क है। इनकी शक्ल और होती है, उनकी बिल्कुल अलग होती है। मुझे याद है मेरी लड़कियाँ छोटी थी। ये Grand Daughters, तो पूछती थीं कि नानी यहाँ की भैंसें सफेद

क्यों हैं? तो भैंस के और गाय के Expression में कोई फर्क ही नहीं है, तो लगेंगी कैसी? अब ये आदिशक्ति के जन्म लेने का समय नहीं था क्योंकि पहले आप जानते हैं कि द्वापर, त्रेता आदि होते गया। वो कलियुग में ही उनको आना था क्योंकि सारे ही चक्रों को लेकर, सारी ही देवियों को लेकर, सारी ही शक्तियों को लेकर के कलियुग में आना पड़ा। नहीं तो कार्य नहीं होता। इतना घोर कलियुग है। इस घोर कलियुग में कार्य करना बड़ा कठिन है और उसने महामाया स्वरूप लिया क्योंकि घोर कलियुग में यदि कोई जाने कि ये आदिशक्ति हैं तो ऐसे ही मारने को दौड़े। इसलिए महामाया बन गई और पहले का जो स्वरूप था तो वो इस तरह महामाया स्वरूप नहीं था। वो पूरा–पूरा प्रचण्ड था क्योंकि इन दिनों में ऐसी कोई बात नहीं थी कि देवी को कोई मार डालेगा। वो जमाना और था, और वो भी उनका जन्म जो हुआ हिमालय की गोद में हुआ और उसके बाद विवाह शिव जैसे महान शक्तिशाली के साथ। तो बहुत बार लोगों को ये प्रश्न होता है कि एक नवरात्र ये है एक नवरात्र वो।

एक देवी के लिए कहते हैं कि महाकाली है, महासरस्वती सब हैं लेकिन सब आदिशक्ति के ही अंग–प्रत्यंग हैं। इनका जो प्रादुर्भाव हुआ वो भी ऐसे ही समय में हुआ कि जिस कार्य को करना था, जैसे अब आपके मेरठ में शाकाम्भरी देवी का प्रादुर्भाव हुआ। उनमें ये शक्ति थी कि वो उपज को बढ़ाती थीं। हम भी मेरठ में थे तो हमने भी बहुत वहाँ खेती बाड़ी करी। तो इतने बड़े–बड़े बैंगन आप खा नहीं सकते! ये बड़े–बड़े टमाटर और ककड़ियाँ, इतनी मोटी इतनी लम्बी कुछ समझ में भी नहीं आता था लोगों को कि ये क्या है! हमें तो पाँच या छः Prizes मिले वहाँ! वो शाकाम्भरी देवी की शक्ति है। तो जहाँ जिस शक्ति का प्रार्दुभाव होता है वहाँ ये शक्ति जो भी हो वही कार्य में ज्यादा रत होती है। अब लोग कभी चामुण्डा कहेंगे कभी कुछ कहेंगे तो उसमें सबको Confusion होता था। लेकिन शक्ति के अनेक स्वरूप हैं और जिस चीज़ की ज़रूरत होती है उनको इस्तेमाल करती हैं। तो ऐसे कोई नहीं है कि दुर्गा हैं तो फिर ये चामुण्डा कौन हैं? ऐसी बात नहीं है, ये सब हैं और इनका होना ज़रूरी है। अलग–अलग देवता हैं जिस प्रकार कार्य करते हैं, इसी प्रकार देवी को भी शक्ति स्वरूपा माना है। देवी के बग़ैर कोई भी अवतरण कुछ नहीं कार्य कर सकता चाहे वो गुरु हो चाहे वो रामवतार हो या कृष्णावतार हो, क्राइस्ट हो, कोई हो। सबके पीछे में एक देवी की शक्ति होती थी। इसलिए हमारे देश में माँ को इतना मानते हैं लोग।

अब चलिए ऐसा कहना चाहिए भारतीय जो हैं शक्ति के पुजारी हैं। बाकी ऐसे ही जो चीज़े बढ़ चली, झगड़े झगड़ूं सब लोग करते

हुए. पर वास्तव में सब लोग शक्ति पुजारी हैं। जो विष्णु को मानते हैं वो भी शक्ति पुजारी हैं, जो शिव को मानते हैं वो भी शक्ति पुजारी हैं क्योंकि माँ–माँ को तो कोई नहीं बाँट सकता। तो ये ऐसी बड़ी भारी संस्था माँ की अपने देश में है और इसलिए हमें उसका बड़ा आदर करना चाहिए। बड़े लोगों को भी करना चाहिए और बच्चों को भी। अभी तक हमारे देश की औरतें इतनी बिगड़ी नहीं हैं पर वो समझती नहीं हैं कि माँ बनने के लिए कौन से, कौन से ऐसे गुण होने चाहिए, जिससे अलंकृत हों और उसी से अच्छे बच्चे बनें। अब आजकल क्योंकि जरा औरतों में और चक्कर चल पड़े हैं तो उनको बच्चे ही नहीं होते। क्योंकि ऐसी औरतों को क्यों बच्चे होंगे और जैसे दूसरे देश हैं जहाँ माताएं ठीक नहीं हैं तो वहाँ बच्चे ही पैदा नहीं होते। जर्मनी में माइनस है, अमरीका में माइनस है, गोरे लोग माइनस हैं। सब जगह ये क्यों माइनस हैं? क्योंकि इन लोगों में मातृत्व नहीं है। अब धीरे–धीरे समझ रहे हैं इस बात को। मातृत्व न होने से बच्चे क्यों पैदा होंगे? वो तो ऐसी जगह पैदा होंगे जहाँ प्यार मिले, उन्हें कोई संवारे।

लेकिन उसी के साथ–साथ मैं सोचती हूँ कि हिन्दुस्तान के आदमियों को औरत की इज्जत करनी है और उसको प्यार करना है। ये बहुत जरूरी है क्योंकि आप लोगों को थोड़े दिन में ये हो सकता है कि भारतवर्ष को लोग आध्यात्म का चरम लक्ष्य समझें। सब कुछ समझें पर यहाँ की जो औरतों की स्थिति है, खासकर उत्तर हिन्दुस्तान में, वो बहुत दुखदायी है। औरत की इज़्जत करना, माने महापाप, उसको मारना पीटना ये तो चलता ही रहता है। Dowry System, फिर अनेक तरीकों से आदमी अपने को उससे ऊँचा बड़ा दिखाना चाहता है। वो है नहीं। आदमी जिस चीज में है उसमें है लेकिन औरत सम उसके अन्दर क्षमता नहीं। उसके अन्दर वो शक्ति नहीं। बच्चा नहीं पैदा कर सकता। जो औरत की इज़्जत नहीं करते वो देश भी नष्ट हो जाते हैं और जो माँ की इज्जत नहीं करते वो भी देश नष्ट हो जाते हैं क्योंकि शक्ति ही खत्म हो गई। तो ये नहीं होना चाहिए कि औरतों के पीछे भाग रहे हैं, औरत का Nomination कर रहे हैं। Equal हम लोग हैं पर Similar नहीं, अलग–अलग हैं। अपनी व्यवस्था अलग है और उसकी अलग है। पर जो मैंने देखा है North India में बहुत ही बुरी हालत औरतों की है। उनको कोई मानता ही नहीं। मैंने खुद ये देखा है कि औरत की कोई इज्जत नहीं और हर तरह से उसको परेशान किया जाता है। सो ये इसको बदलने का हम सोच रहे हैं। काफी प्रयत्न करना चाहिए। ये दूसरा सृजन का कार्य है किसी का नाश करने का नहीं, सृजन का कार्य है। अगर ये हो जाए, ये सृजन का कार्य बन जाए तो हमारी भारत भूमि जो है शस्य श्यामलाम् हो जाए। हमें

इसके लिए कायदे कानून बनाने की ज़रूरत नहीं, अन्दर से ही हमें ये समझना चाहिए। स्त्री जो है ये देवी के ही लक्षण में है। अब वो अगर कुछ खराब हो तो दूसरी बात है। पर स्त्री एक देवी है और उसकी इज्जत करना, उसको सम्भालना और उसको हर तरह मदद करना, ये हरेक पुरुष का कर्त्तव्य है। पर ऐसे होता नहीं है। पुरुष हमेशा ऊपर में जमा रहता है। हरेक मामले में। उसके पास बुद्धि ज्यादा होती है पर हृदय तो स्त्री के पास होता है। इसलिए कोशिश ये करनी चाहिए कि स्त्री का मान रखा जाए। स्त्री को भी समझना चाहिए कि जब तक वो देवी स्वरूप है तब तक ठीक है पर वो गर और कुछ हो जाती है तो उसका क्यों मान किया जाए? इसलिए उसमें भी ये गुण विशेष आने चाहिएं और उसमें भी ये बात आनी चाहिए। गर किसी स्त्री में ये गुण नहीं है तो उसको आप छोड़ दीजिए। उसको आप अलग हटा दीजिए। पर जिसमें हैं उससे ठीक बर्ताव करें। अधिकतर क्या देखा जाता है कि जो ज़बरदस्त औरतें हैं उनकी पूजा होती है और जो बेचारी अच्छी हैं उनको लोग लताड़ते हैं। तो अपने को अपने जो अच्छे सहज आदर्श हैं एक अच्छे पति पत्नी बनना चाहिए और आपस में बहुत प्रेम और आपस में बहुत understandings होनी चाहिए। तभी सहजयोग असली फलेगा, नहीं तो नहीं फल सकता।

इस तरह से देवी के अनेक स्वरूप हमारे शास्त्रों में वर्णित हैं और वो सब बिल्कुल सही हैं। उनमें कोई त्रुटियाँ नहीं है, गलती नहीं है। पर इसकी गहनता समझने के लिए सहज में उतरना पड़ेगा। वो vibration से आपको पता लगेगा और उसमें discrimination आप देखेंगे कि हरेक शक्ति के अलग viberation हैं। ये बड़ी सूक्ष्म बात है, इसलिए ये जितनी आपकी प्रगति होगी उतनी ही आप समझ पाएंगे। उसका मतलब नहीं कि अब आप उसी में लगे रहिए, मतलब ये है कि आप सिर्फ ध्यान धारणा से अपनी गर शक्ति बढ़ाएं और अपने को उस स्तर पर उतार लें तो आप खुद ही समझ जाएंगे। इंसान को देखते ही आप समझ जाएंगे कि ये कैसा आदमी है। एकदम वो ज्ञान, एकदम आ जाएगा क्योंकि हम ज्ञानवादी हैं और हमारी नसों में ज्ञान आ गया है। तो ये सब पता हो जाएगा। पर उसके लिए ध्यान करना बहुत ज़रूरी है और कोई इसका मार्ग नहीं है कि आप बड़े पूजन करिए भजन करिए और ये करिए। कुछ नहीं, ध्यान करना चाहिए और उसके साथ ही साथ Introspection। मैं क्यों कर रही हूँ, इसे मैं ऐसे क्यों कर रहा हूँ? मुझे ऐसे क्या करना है? अपने ऊपर ध्यान होना चाहिए, दूसरे का नहीं क्योंकि उसका कोई फायदा नहीं होने वाला। आपने तो अपने को ठीक करना है, तभी दूसरे की आप त्रुटि ठीक कर सकते हैं। तो अपने ऊपर ध्यान होना चाहिए कि मैं क्या कर रहा

हूँ, ऐसे क्यों सोच रहा हूँ, मेरे दिमाग में ऐसी बातें क्यों आती हैं? अपनी तरफ ध्यान होना चाहिए और दूसरे की तरफ प्रेम दृष्टि होनी चाहिए। प्रेम की दृष्टि कि मैं तो प्रेम में बैठा हूँ और अन्दर मेरे क्या प्रेम हो रहा है सबके लिए? मैं सबको प्रेम दृष्टि से देखता हूँ? मैं सबको माफ कर देता हूँ? इस तरह से दो चीज़ा हैं– एक तो ध्यान और एक आत्मावलोकन, जिसे कहते हैं। तो ये दो चीज़ों से मनुष्य की प्रगति होती है। माने एक तो ध्यान वो तो बात सही है कि ध्यान से आप अपने अन्दर और चैतन्य अन्दर लेकर के और बढ़ते हैं, और अपने अवलोकन से अपने introspection से भी आप अपने अन्दर के जो obstacles हैं उनको निकाल देते हैं। जैसे एक नदी का प्रवाह बह रहा है, अब उसके अन्दर बहुत से पत्थर हैं, कुछ हैं, तो प्रवाह ठीक से बह नहीं सकता। गर वो पत्थर क्या हैं आप देखते हैं और निकाल लें तो कुण्डलिनी का प्रवाह बिल्कुल बड़े जोरों में बह सकता है और बहेगा। इसके बाद यही बात है। आप स्वयं ही इसको महसूस करेंगे। इसकी प्रचीती होगी कि आप एकदम स्वच्छ हो गए, अब कुछ रहा नहीं आपमें, एक दम स्वच्छ हो गए। वो चीज़ अन्दर से आने से उसमें एक तरह से मैं कहती हूँ ध्यान तो आप लोग करते हैं, ये मुझे मालूम है, लेकिन introspection अपने बारे में सोचना चाहिए। उसमें आलोचना करने की जरूरत नहीं अपनी, लेकिन उसको साक्षी भाव से देखना है और दूसरे ये कि कहाँ तक मैं प्रेम करता हूँ? कहाँ तक मैं शुद्ध हूँ? कहाँ तक मैं अहंकार से बचा हूँ? ये अगर आप देखने लग जाएं तो धीरे–धीरे सभी दोष भाग जाएंगे, जैसे अगर कोई दुष्ट आदमी समझ लीजिए आपके घर में आए आपकी उसके ऊपर नजर पड़ी तो वो भाग जाएगा कि नहीं? उसी प्रकार ये जो बैठे हैं घुसपैठ करने वाले, ये सब भाग जाएंगे यदि आप introspection करें। पर अगर आप अहंकार में, 'मैं तो ठीक हूँ मैं तो बिल्कुल ठीक हूँ' ऐसे चले तो यही सफाई करने की जरूरत है। यही निर्मलता, यही स्वच्छता अन्दर आने की जरूरत है और कुण्डलिनी तो अपना कार्य कर ही रही है, वही आपको छुड़ाएगी। ये तो कोई कह नहीं सकता कि हम छुड़ाएंगे लेकिन आपकी दृष्टि पड़ते ही आपकी वो जो बातें हैं दौड़ जाएगी। अब किसी को थोड़ी–थोड़ी लोलुपता होती है जैसे सत्ता मिल गई फिर भी रूके नहीं। तो चाहते हैं फिर और कोई सत्ता मिले। फिर उसके पीछे दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं– इसका कोई अन्त नहीं होता। और गर ये चीज आपके नजर में आ जाए कि मैं तो पागलों के जैसे दौड़ रहा हूँ, ये सत्ता के पीछे में, इसमें क्या है? बेकार है। शान्ति से बैठे जो मिलता है उसका उपभोग हो। अब दौड़ रहे हैं, दौड़ रहे हैं। जो मिला है उसको भी नहीं भोग रहे, उसका भी नहीं आनन्द उठाया और दूसरे के पीछे भागे और दूसरे के पीछे।

जब ये दशा आ जाएगी जिसको मैं सहजावस्था कहती हूँ तो सहजावस्था में सारी दैवी शक्तियाँ जितनी हैं आपके चरणों मे आ जाएंगी। आपको सम्भालेगी, आपको गाइड करेंगी, आपको वरदान देंगी। सारी चीज़ें आ जाएंगी। पर सहजावस्था आनी चाहिए। उसमें मैं ये करने वाला हूँ, मुझे करना चाहिए मुझे ये करना है, वो करना है, ये जब शुरू रहता है तो मैं कहती हूँ कि अभी सहजावस्था नहीं है। और जब सहजावस्था आई तो जैसे छोटा एक बच्चा पालने में पल जाए ऐसे ही माँ की शक्ति के स्वरूप में वो बैठा है और ये जितनी भी शक्तियों का वर्णन है वो सारी शक्तियाँ हर पल हर तरह से मदद करेंगी। जिसकी जो ज़रूरत होती है वो पूरी करती है हरेक शक्ति में कोई न कोई ऐसी विशेषता है और इसलिए शक्ति की हम लोग पूजा करते हैं और उसको मानते हैं। किसी भी अवतरण से ज्यादा हम शक्ति को मानते हैं, सब लोग। उसका कारण ये है कि शक्ति ही हमको अवतरण की ओर अग्रसर करती है, उसी की दृष्टि से हम अवतरण को पहचान सकते हैं नहीं तो हम पहचान नहीं सकते। इसलिए शक्ति ही है, आपकी गुरु शक्ति ही आपकी माता है और शक्ति ही आपकी अगुआ है। इसलिए और किसी को मानने की जरूरत नहीं। जब एक बार शक्ति को आपने मान लिया तो शक्ति सबको मनवा लेगी, सबको समझा देगी। और अब आपने सहज में देखा है अब आप लोग सब हमें तो मानते ही हैं ठीक है। लेकिन हम आपको मनवाते हैं और लोगों को, इनको भी मानो, उनको भी मानो उनको भी मानो। लेकिन गर हमें न मानते होते, किसी भी अवतरण को मानते होते, क्राइस्ट को ले लें, तो उन्होंने कहा तो है कि हम आपके पास भेज देंगे ऐसा एक अवतार, और ऐसी आदिशक्ति आएंगी (Holy Ghost Would come) आखिर गर वो अपना कार्य पूरा कर गए होते तो काहे को कष्ट उठाते। मोहम्मद साहब ने भी कहा, सबने ये क्यों कहा कि उद्धरण संसार का होने वाला है। मानो उन्होंने भविष्य की बात करी, इसका मतलब ये होता है, सीधा–सीधा, कि उन्होंने जो भविष्यवाणी कही वो इसलिए कि वो जानते थे कि अभी समय नहीं आया है कि इनको हम पूर्णता में ले जाएं, पूर्ण में ले जाएं और उनकी पूर्णता आने के लिए स्थिति आने वाली है, ये कह देने से, ये बता देने से कि आपकी ऐसी स्थिति आने वाली है। कोई न कोई ऐसे आने वाले हैं और उसके लिए आप सिर्फ अपना जो चित्त है साफ़ रखें और परमात्मा को याद करें रस्ता बता देते हैं। लेकिन किसी ने सामूहिक चेतना नहीं दी। चेतना भी बहुत कम लोगों को है। जिसकी वजह से वो चीज़ अब आप लोगों ने प्राप्त की है। अब आपको तो बहुत जोरों में इसमें प्रगति करनी चाहिए। बस दो ही चीज़ तो करनी है, एक तो ये कि ध्यान करना है और एक introspection और उसमें तीसरी चीज़ जो है जब आपको जो उसमें होगा

मतलब सौन्दर्य दृष्टि आ जाएगी। हरेक आदमी की सुन्दरता दिखाई देगी, उसकी अच्छाई दिखाई देगी। कितना भी आदमी आपसे दुष्टता से व्यवहार करे तो समझ में आएगा नहीं। इनमें ये बात जरूरी थी। ये सीखने की बात है। तो आपकी नज़र बुराई से उठकर के अच्छाई पर जाएगी और जब अच्छाई पर जाएगी तो आप अच्छाई अपनाएंगे। लेकिन आपकी बुराई पर नज़र रहेगी तो आप कैसे अच्छाई अपना सकते हैं? इसलिए ये जो स्थिति है जिसमें कि आप, मैंने कहा कि आप, अपने को भी आत्मनिरीक्षण करें। गर आपमें सुन्दरता है तो आपको अपने ही से आनन्द आएगा। गर आप दूसरों में देख रहे हैं तो और आनन्द आएगा। तो सुन्दरता ही देखने के लिए है। आदमी की अच्छाई देखनी चाहिए और उसमें फिर आपको आश्चर्य होगा कि हरेक आदमी में कोई न कोई खूबी तो है ही। लेकिन उसका मज़ा कोई नहीं उठा सकता। अब जैसे एक फूल है। फूल के अन्दर सुगन्ध है। लेकिन गर आपके पास नाक ही नहीं हो तो आप सुगन्ध कैसे लेंगे? ऐसी बात कि आपके अन्दर वो हृदय होना चाहिए जो उस प्यार को, उस महत्ता को, उस बड़प्पन को समझ सके और उसको आप अपनाइए। तो जितना वो आदमी अपने को नहीं आनन्दित कर सकता आप कर सकते हैं। उसमें जो छिपा हुआ है उसको आप जान सकते हैं और उसका आनन्द उठा सकते हैं। सो दूसरों से आनन्द उठाना सीखना ये शक्ति का ही काम है। शक्ति आनन्द में ही है, आनन्ददायी है और जब ये आनन्द आने लगेगा तब आप देखिएगा कि आप समझ जाएंगे कि अब तो हम हो गए सहज। तो ये सहजावस्था है कि दृष्टि ही आपकी गलत चीज़ों पर नहीं जाएगी। क्या फायदा? क्योंकि आपको कुछ सीधा संहार नहीं करना है, वो तो देवी का काम है, आपको नहीं करना है। तो सारी दुनिया का जो आनन्द अलग–अलग जगह छिपा हुआ है उसका आँकलन, उसका उपभोग लेना आपके नसीब में है। इसलिए आज के दिन, क्योंकि आज मैंने बताया पहला दिन है, उनका शैल पुत्री का और उन शैल पुत्री का मतलब ये भी होता है कि उनकी अवलोकन शक्ति, क्योंकि हिमालय में पैदा हुई। हिमालय सबसे ऊँचा पर्वत है और वहाँ से सारी दुनिया का अवलोकन, मतलब उनकी दृष्टि सब पर पड़ने दीजिए। पहले शैल–पुत्री का दिन वो सब देख लें है क्या? छोटे बच्चों को भी देखिए, सबको देखते हैं ये कौन हैं? वो कौन है? वो कौन है? उसी तरह शैल पुत्री का कार्य है और उस पर से और भी नाम है। शैलजा। ये वो हैं। पर जो अपने यहाँ ग्रन्थों में माना जाता है नवरात्रि जो चैत्र की नवरात्रि है उसमें जो पहले देवी का अवतरण हुआ वो हैं शैल पुत्री। हर जगह चैत्र की, जिसको बहुत मानते हैं, जैसे बिहार में आपके यहाँ छठ होती है षष्ठी के दिन। षष्ठी के दिन वहाँ होती है छठ। वो ये इस दिन में से है।

अब गायत्री मंत्र भी बहुत Right Sided आदमी को नहीं कहना चाहिए क्योंकि Right side की Powers उनको तनाव की ओर ले जाती है। उससे अच्छा Left side के मंत्र कहें जो बहुत Right sided हैं। जो Left sided है वो right side के मंत्र कहें। इस तरह से Balance आ जाएगा। तो मतलब, ये समय आनन्द–विभोर होने का है। इतना बड़ा महत्वपूर्ण समय है और हमारा भी जन्म ऐसे ही समय में हुआ था। कमाल तो ये है कि इसके बाद, हमारे जन्म के बाद नवरात्र भी यहीं से शुरू हुए थे और हमारे जन्म के बाद ही नवरात्र शुरू हुए थे। सो इसके बड़े कमाल के combinations हैं। तो 21 मार्च के बाद ही नवरात्र आता है उससे पहले नहीं। इस प्रकार इस चैत्र की जो है बड़ी कमाल है और अपने यहाँ चैत्र वगैरा ऐसे गाने भी होते हैं। उसका एक ढंग होता है गाने का, चैती गाना। क्योंकि क्या है कि पहले के साधु सन्तों ने कवियों ने और बहुत सारे गायकों ने जब चैत्र की वो खुशियों को पाया तो वो स्वर में बंध गया तो वो गाना शुरू हो गया। चैत्र का आनन्द जो है कि गाँवों में बहुत मानते हैं चैत्र को। उस वक्त जो गाने आप सुनिए ऐसा लगता है कि अन्दर से उन्माद है, उत्साह और बहुत प्यार और आनन्द का उसमें अभिभाव है। तो वो इन देहाती औरतों में कहाँ से आया? देहात के लोगों में कैसे आया? वो इतनी सुन्दर कविताएं लिखते हैं, इतनी सुन्दर कि वो कहाँ से आया? वो ये ही कि वो सरल हृदय लोग थे। तो वो यही चीज़ देखते थे, इसको ही प्राप्त करते थे और प्राप्त किया। उनके हृदय में शक्ति थी ग्रहण करने की। अब हम लोग जरा बंट गए हैं। Right sided हो गए है। तो भी सहजावस्था प्राप्त होनी चाहिए। सहजावस्था का जो आनन्द है उतना उनको नहीं आनन्द आया होगा जितना वो आपको आएगा चैती के गाने सुन के। बड़ा आनन्द आएगा, इतना उनको नहीं आएगा। हो सकता है उनमें इतनी आकलन शक्ति नहीं पर आप लोग बड़े आनन्द से उसको सुन सकते हैं। तो ये बड़ा विशेष है और सबसे विशेष ये है कि विक्रमादित्य ने जब उसे स्वीकार किया तो इसी को ये जो है तृतीया, इसी को उसने माना, कि इसी से शुरू करना है। माने एक तारीख, ये इसको अक्षय तृतीया ही नाम रख दिया। अक्षय तृतीया से ही उन्होंने अपने शुरू करे कलैण्डर। वैसे ही शालिवाहन ने जो संवतसर बनाया, वो भी इसी तारीख से। आखिर उन्होंने और इन्होंने भी, इनकी तारीख एक जो है दोनों की । आश्चर्य की बात है क्योंकि इसमें विक्रमादित्य का राज्य था उसमें उन्होंने शालिवाहन ने Attack किया। उनको हराया वो तो बब्रुवाहन उनके मतलब शालीवाहन शायद उनको हराया और उसके बाद उन्होंने बनाया ये शालीवाहन का शक और इस शालीवाहन के शक की जो पहली तारीख है वो भी अक्षय तृतीया है और उनकी भी जो पहली तारीख है वो भी अक्षय तृतीया

है। बड़े आश्चर्य की बात है। और मुसलमानों का जो हिजरी होता है न वो भी यही है। first यही है वो। सबने इसी तारीख को माना firstऔर पारसी भी**नवरोज़** कहते थे। कारण क्या? कारण ये कि एक ही शक्ति से प्रेरित लोग थे। तो उन्होंने इसी दिन को माना। ये बहुत महत्वपूर्ण है और इस दिन जो भी कार्य करो वो सफल हो जाता है और खास कर लोग कुछ गर विशेष कार्य करना है तो उसको आज के दिन करते हैं क्योंकि आज का दिन सबसे ज्यादा, सबसे ज्यादा पुण्य Auspicious दिन है। तो बड़ी खुशी की बात है कि आप सब लोग आए यहाँ और इसके बारे में हम लोगों ने इतना जाना।

तो आज हम लोगों को अपने अन्दर यही निश्चय कर लेना चाहिए कि हम लोग रोज़ ध्यान करेंगे और उसी के साथ introspection। जब सोचेंगे तो अपने ही बारे में दूसरे के बारे में नहीं। अपने बारे में सोचेंगे और फिर उसको किस तरह से मधुरता से हम अपना जीवन बिता देते हैं। बात करने में, किसी से व्यवहार में हम उसको किस तरह से मधुरता से हम अपने विचारों को प्रकट करें। ये सब सीखना चाहिए। जिससे हम किसी को दुख नहीं दे सके, जिससे तकलीफ न हो। उल्टे ही जो कुछ कहना है वो कहो। कभी–कभी ज़रूर कहना पड़ता है जोरों में, पर अधिकतर जिससे आप कह रहे हैं उसको ये हमेशा एहसास होना चाहिए कि ये प्यार में कहा जा रहा है। तो उस प्यार में ही आपको बोलना चाहिए तो वो किस तरह से कहा जाए? अब मेरे लिए तो रोज़ ही प्रश्न है कि अब वो आ रहे हैं तो उनसे क्या कहेंगे? वो आ रहे हैं तो उनसे क्या कहेंगे? इनको कैसे समझाएंगे? लेकिन ये शक्ति जो है प्यार की, ये जब हम देखते हैं चारों तरफ प्यार ही प्यार, आनन्द में है इस सबमें देखते हैं हर जगह प्यार ही प्यार है। तो वो प्यार हमारे अन्दर समा जाता है। ये आदान प्रदान से है और फिर उसके बाद उस प्यार से ही आप सबसे बात करें। सहजयोगियों को चाहिए किसी पर बिगड़ें नहीं, किसी से नाराज़ नहीं हों, वो मेरे पर छोड़ दें। शान्ति पूर्वक सब से मिलो एकदम सात्विकता आपके अन्दर आनी चाहिए लोगों को समझना चाहिए कि आप बहुत सात्विक हैं और आपके अन्दर कोई घृणा क्रोध आदि नहीं। तब लोग समझेंगे ये बहुत जरूरी है। अब तो आप लोग पार हो गए, सब कुछ हो गया। अब जो आगे का कार्य है उसके लिए जैसा व्यक्तित्व चाहिए वो मैं बता रही हूँ। आशा है आप लोग इस चीज का अनुसरण करेंगे और इसको अपने अन्दर की जो Introspection है उसको प्रेम से, अपने को भी प्रेम से देखना चाहिए, hatred से नहीं और फिर आपको समझ में आ जाएगा कि अरे मैं क्यों मैं ये कर रहा हूँ? जाने दो, छोड़ो। इस तरह से आदमी में एक सात्विकता आ जाएगी। आदमी बड़े सात्विक हो जाएंगे। इसी प्रकार से सहजयोग बहुत सुन्दर हो जाएगा और मेरा जो ये स्वप्न है कि सारी दुनिया में इतने सहजयोगी हो जाएं कि दुनिया ही बदल जाए। तो अनन्त आशीर्वाद

सबको अनन्त आशीर्वाद

भारतीय राजस्व सेवा अधिकारी सम्मेलन

दिल्ली – 17.4.2000

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

सभी सत्य साधकों को मेरा प्रणाम! अभी–अभी आपको सहजयोग के लाभ के विषय में बताया गया। परन्तु सहजयोग के प्रभाव हम पर कहीं अधिक गहन और अधिक होते हैं। वास्तविकता ये है कि हम लोग स्वयं को नहीं जानते, स्वयं के प्रति हम चेतन नहीं हैं। हमें ये जानना होगा कि हम कौन हैं, तब सभी शारीरिक, मानसिक भावनात्मक और आध्यात्मिक समस्याओं का कारण हम जान पायेंगे। ये समझ लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि हमें कितना सुन्दर बनाया गया है। मानव शरीर की रचना बहुत ही सुन्दरतापूर्वक की गई है और यदि आप चिकित्सा विज्ञान पढ़ें तो आप जान जाएंगे कि कितनी भली–भांति इसकी देखभाल की गई है। आप हृदय को लें या किसी अन्य अवयव को, परन्तु हम लोग कई बार इसे बिगाड़ देते हैं, संभवतः इसलिए कि हमें इसका ज्ञान नहीं है या इसलिए क्योंकि हम नहीं जानते कि हम अपने लिए क्या करें?

आज जब मैं आप लोगों की इतनी सम्माननीय सामूहिकता के सम्मुख बोल रही हूँ, मैं सोचती हूँ कि ये बताना बहुत आवश्यक है कि आपके जीवन में क्या समस्या है? मैं स्वयं एक सरकारी अधिकारी की पत्नी हूँ और भली–भांति जानती हूँ कि सरकारी अधिकारियों के साथ क्या समस्याएं होती हैं? इन समस्याओं को केवल वही व्यक्ति समझ सकता है जो सरकारी सेवा में रत रहा हो। सबसे पहली चिन्ता जो हम लोगों को होती है वह यह है कि किस प्रकार हम इस नौकरी में बने रहें? इस संस्था के अच्छे सदस्य बने रहने के लिए अपने स्तर पर हम क्या करें? आप जो भी करें, जो भी कुछ करने का प्रयत्न करते रहें, किसी न किसी स्तर पर आकर आप महसूस करते हैं कि इसे न तो समझा गया है और न ही इसका कोई पुरस्कार दिया गया है और न ही लोगों ने इसके लिए आपको उत्साहित किया है। ऐसी स्थिति में यह बहुत निराशाजनक बात हो जाती है क्योंकि अत्यन्त ईमानदारीपूर्वक हम कठोर परिश्रम कर रहे होते हैं। वास्तव में अपनी ईमानदारी के कारण सरकारी अधिकारियों को काफी कष्ट उठाने पडते हैं। इन कष्टों को मैं जानती हूँ तथा ये भी कि किस प्रकार उन्हें सहा जाए? इसके बावजूद भी जब आपको एक प्रकार का

अपमान या तिरस्कार सहना पड़ता है तो आप कई बार बहुत ही निराश और हतोत्साहित हो जाते हैं।

हमें ये जानना है कि हम हैं क्या? एक बार जब हम ये जान जाएंगे कि हम क्या हैं तो हमें ये सब निराशा आदि न होगी। हम केवल सर्वसाधारण मानव ही नहीं हैं, नहीं! हम पशु नहीं हैं। हम तो अत्यन्त विशिष्ट लोग है जिन्हें विशेष कार्य सौंपा गया है। इसका प्रतिकार करने के लिए सबसे पहली चीज़ जो मैं सुझाऊंगी वो ये है कि आप अपने देश से प्रेम करें। इन लोगों ने आपको मेरे माता–पिता के विषय में बताया है, मैंने देशभक्ति देखी है। किस प्रकार उन्होंने देश के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर दिया। आज हमारी स्थिति कहीं बेहतर है। हम लोग स्वतन्त्र हैं। आनन्द लेने के लिए हम स्वतन्त्र हैं, जबकि इन लोगों को बहुत कष्ट उठानें पड़े। मेरी माताजी पाँच बार जेल गई। पिताजी जेल गए और कई बार तो ढाई–ढाई साल के लिए। हमारा बहुत बड़ा परिवार था फिर भी हमने इस सारे संघर्ष का बहुत आनन्द लिया। हमने इसका आनन्द इसलिए लिया क्योंकि हम जानते थे कि हम सेनानी हैं, देश की स्वतन्त्रता के लिए युद्ध करने वाले सिपाही। अब वह संघर्ष समाप्त हो गया है, स्वतन्त्रता के लिए हमें युद्ध नहीं करना। परन्तु अब हमें ये समझना है कि देश को दृढ़ करने का यही समय है। उस दिन भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारियों के सम्मुख बोलते हुए मैंने बताया कि मेरे पति आरम्भ में भारतीय विदेश सेवा में चुने गए थे। मैंने उन्हें स्पष्ट बता दिया कि मैं विदेश नहीं जाऊंगी। अभी–अभी तो हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है और आप विदेश जाना चाहते हो! फिर हम शराब नहीं पीते, वहाँ पर हम पार्टियाँ कैसे करेंगे? मुझे विदेश सेवा से कुछ नहीं लेना देना। आपको जाना है तो चले जाएं। मैं भारत में ही रहूँगी। मेरी प्रतिक्रिया पर वो बहुत हैरान थे। उन्होंने कहा, "मैं भारतीय प्रशासनिक सेवा में आने का प्रयत्न करूँगा।" और सौभाग्य से उन्हें ये नौकरी मिल गई चाहे इसके लिए उन्हें वेतन में कुछ हानि ही हुई। मैं बहुत प्रसन्न थी कि यही समय है जब हम देश को बना सकते हैं। उनके सरकारी अधिकारी होने के कारण निःसन्देह मैं कुछ न कर पाई। परन्तु उनके माध्यम से मैं देख पाई कि हम बहुत से कार्य कर सकते हैं। इसके लिए मुझे कुछ करने की या अपने विचार देने की आवश्यकता नहीं है। वो स्वयं इस कार्य को कर सकते हैं और जिस प्रकार उन्होंने कार्य किया और जिस प्रकार कार्य में व्यस्त हुए वह आश्चर्यजनक था। जब तक हम यहाँ रहे उन्होंने एक छुट्टी भी नहीं ली। एक दिन के लिए भी नहीं। शास्त्री जी को ये लगा कि वे अपना पारिवारिक जीवन बलिदान कर रहे हैं। परन्तु ऐसा कुछ भी न था। मुझे कभी भी ऐसा नहीं महसूस हुआ। मैंने हमेशा यही

सोचा कि भारतीय होने के नाते देश को दृढ़ करके शानदार बनाना हमारा कर्त्तव्य है। ऐसा हम कर सकते हैं क्योंकि हम अत्यन्त विवेकशील लोग हैं।

आप देखिए कि किस प्रकार लोग इस इंटरनेट और सॉफ्टवेयर के युग में प्रगति कर रहे हैं! मुझे ऐसा लगता है कि अब सरस्वती और लक्ष्मी परस्पर सहयोग करने लगी हैं और इसी सहयोग का परिणाम लोगों में दिखाई दे रहा है। अब समय आ गया है जब हमारा देश आर्थिक शक्ति के रूप में विकसित हो सकता है। परन्तु चीज़ें यहीं नहीं समाप्त हो जातीं। चाहे आपका आर्थिक स्तर बहुत ऊँचा हो या आप तकनीकी रूप से बहुत विकसित हों फिर भी यदि आप अत्यन्त विकसित देशों की ओर देखेंगे तो जान जाएंगे कि ये देश सुखी नहीं हैं, वहाँ न शान्ति है न प्रेम। बड़ी अजीब स्थिति है कि धन के लिए कुछ भी नहीं खरीद सकता। ये अब हमारे सम्मुख समस्या ये है कि हमें इस बात का पता लगाना है कि हम चाहते क्या हैं? इसके लिए हमारे सृष्टा ने पहले से ही सब प्रबन्ध किए हुए हैं। अपनी उत्थान प्रक्रिया, अपने विकास, अपने पुनरुत्थान की तरफ केवल एक कदम ले लेने से ही समस्याओं का समाधान हो जाएगा। हममें ये योग्यता है। हम वास्तव में चुने हुए लोग हैं। वास्तव में इस देश के लोग। ये इतना महान देश है। ये योगभूमि है, दिव्यता और चैतन्य लहरियों से पूर्ण। परन्तु आज हम लोग इन सारी उपलब्धियों से कट गए हैं और यही कारण है कि हम नहीं जानते कि अपनी इस मातृभूमि में क्या विशेषता है और हम क्या प्राप्त कर सकते हैं? एक दिन वो आएगा कि जब पूरा विश्व इस योग भूमि की पूजा करेगा।

जैसा बताया गया है कि हमारे अन्दर ये शक्तियाँ हैं, मैं इन्हीं के विषय में आपको बताऊंगी। आप हैरान होंगे कि प्रचीन काल से ही इस देश को इस ज्ञान के विषय में जानकारी थी परन्तु बर्तानवी तथा अन्य साम्राज्यों के कारण ये सारा ज्ञान लुप्त हो गया। उन लोगों ने इस ओर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया। परन्तु उस समय भी नाथपन्थी लोग यहाँ थे। वे जानते थे कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने का एकमात्र मार्ग कुण्डलिनी जागृति है। परन्तु लोगों के लिए आत्मसाक्षात्कार का विचार इतना सीमित था निरर्थक था कि लोग इसे नहीं पाना चाहते थे। कहते थे कि इसके लिए आपको अपने परिवार त्यागने होंगे, सम्पत्ति त्यागनी होगी और सभी कुछ त्यागना होगा। आपको सब लोगों से दूर हो जाना होगा, किसी सम्बन्धी से सम्बन्ध न रखना होगा। इस प्रकार के अटपटे विचार लोगों के मस्तिष्क में आ गए और उन्होंने इन विचारों का खूब प्रसार किया। इस प्रकार की सोच ने वास्तव में हमारे अन्तःस्थित वास्तविकता को नष्ट कर दिया, क्योंकि यह कहना यह त्याग दो,

वह त्याग दो तथा इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण विचार नहीं होने चाहिए। आप कुछ भी नहीं त्यागते, सभी कुछ ज्यों का त्यों होता है। बाहर से आपको एक अहसास होता है कि आपने यह सब गुरु को दे दिया या किसी और को और इस प्रकार आत्मसाक्षात्कार के साथ यह सब चीज़ें जुड़ गई हैं।

आपको कुछ भी नहीं त्यागना पड़ता। आप जैसे हैं कुण्डलिनी आपके अन्दर विद्यमान है। वे आपकी माँ हैं, आपकी व्यक्तिगत माँ। केवल आप ही उनके बच्चे हैं। आपको कुछ भी त्यागने की जरूरत नहीं क्योंकि वे आपकी देखभाल करती हैं और आपको पुनर्जन्म देने वाली हैं। आपकी माँ ने जब आपको जन्म दिया था तो क्या उन्होंने कोई कष्ट आपको दिए? सभी कष्ट स्वयं सहकर वे आपको विश्व में लाईं। इसी प्रकार आपको पुनर्जन्म देने के लिए, द्विज बनाने के लिए आपके अन्दर माँ को स्थापित कर दिया गयाहै। वे आपके अन्दर विद्यमान हैं और वहीं आपको आत्मसाक्षात्कार दे सकती हैं। केवल मैं ही आपको ये बात नहीं बता रही, विश्व के सभी सन्तों ने आपको यह बात बताई है। बारहवीं शताब्दि में ज्ञानदेव तथा उस समय के अन्य सन्तों ने यही बताया। परन्तु उससे भी पूर्व मार्कण्डेय ऋषि ने इसकी बात की। इन लोगों के विषय में हम कुछ भी नहीं जानते। सोलहवीं शताब्दी में गुरुनानक देव और श्री कबीरदास आए और कुण्डलिनी जागृति की बात की। कबीर दास ने कहा, "ईड़ा, पिंगला, सुखमना नाड़ी रे, शून्य शिखर पर अनहद् बाजे रे"।

किसी ने भी न समझा कि वे क्या कह रहे हैं? उन्हें पढ़ते जाने से, पढते जाने से आप कहाँ पहुँचेंगे? आदिशंकराचार्य ने भी प्रार्थना की कि हे माँ! कृपा करके किसी भी तरह से मेरे मस्तिष्क से इस अज्ञानान्धकार को दूर कर दीजिए। मैं तो शब्दों के जाल (शब्द–जालम) में फँसा हुआ हूँ। कृपा करके मेरे अन्दर से ये शब्द जाल समाप्त कर दीजिए। इन सभी ने यही कहा है। कबीरदास ने कहा, "पढ़ि पढ़ि पण्डित मूर्ख भए"। तो आप यदि शास्त्रों को पढ़ते रहेंगे तो भी कार्य न होगा। वैज्ञानिक तथा बौद्धिक दृष्टि से आप कहेंगे कि ये सब बकवास है। किसी ने भी यह खोजने का प्रयत्न न किया कि इन सब लोगों ने जो कहा उसमें क्या सच्चाई है। आज भी इन सब सन्तों का सम्मान किया जाता है परन्तु कोई भी गहनता में जाकर ये नहीं देखना चाहता कि इन्होंने जो लिखा उसका सारतत्व क्या है?

गुरुनानक ने कहा, "सहजसमाधि लाओ"। उन्होंने स्पष्ट कहा, "सहज रूप से स्वतः आप इसे प्राप्त करो।" लोगों को समझना चाहिए कि ये सभी कर्मकाण्ड, ये सभी आडंबर, जो इन लोगों ने त्याग दिए थे, व्यर्थ हैं। सोलहवीं शताब्दि में बहुत से सन्त हुए जिन्होंने कुण्डलिनी की बात करनी चाही, परन्तु उन्होंने

अपनी बातों को पद्य में लिखा क्योंकि कविता अभिव्यक्ति का सुरक्षित माध्यम है। अन्यथा लोगों ने उन्हें धमकाया होता, पीटा होता और क्रूसारोपित कर दिया होता। अतः उन्होंने सोचा कि गद्य (Prose) में लिखा ही न जाए, पद्य में लिखना ही ठीक है। परन्तु पद्य को गलत ढंग से समझा जा रहा है। **ज्ञान प्राप्त किए बिना पढ़ने से भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो रही** है। अतः पहले आपको ज्ञान (आत्मसाक्षात्कार) प्राप्त करना होगा। सहजयोग ज्ञानमार्ग है जहाँ आपको ज्ञान, पूर्ण ज्ञान, किताबी ज्ञान नहीं, प्राप्त होता है। कैसे? जब आपकी कुण्डलिनी उठती है तो वह आपके ब्रह्मरन्ध्र का भेदन करती है। "शून्य शिखर पर अनहद बाजे रे" कहा गया है। और जब यह सूक्ष्म से अर्थात् परमात्मा के प्रेम की दिव्य शक्ति से एक रूप हो जाती है तो आप इसे जो चाहे नाम दे सकते हैं। सन्तों ने इसे परम चैतन्य कहा। इसका योग जब परम चैतन्य से होता है तब काम, क्रोध, मद, मत्सर, लोभ और मोह आदि दोष स्वतः ही छुट जाते हैं। क्योंकि अब आप ज्ञान के क्षेत्र में होते हैं। आइंस्टीन ने इसके विषय में लिखा है कि, "सम्बन्धित सिद्धान्त की अभिव्यक्ति करने के लिए मैं शब्द खोज रहा था, परन्तु मेरी समझ में कुछ नहीं आया। प्रयोगशाला में मैं इतना परेशान हो गया कि "घर आ गया और साबुन के बुलबुलों से खेलने लगा और अचानक किसी अज्ञात दिशा से ये सारा ज्ञान मेरे अन्दर कौंध गया (स्पष्ट हो गया)।" इस अज्ञात को उन्होंने ऐंठन क्षेत्र (Torsion Area) का नाम दिया। यह क्षेत्र हमसे बहुत परे है, हमारे मस्तिष्क से ऊपर का क्षेत्र है। प्रायः हर समय हम अपने मस्तिष्क से प्रतिक्रिया किए चले जाते हैं। कुछ भी कहकर आप प्रतिक्रिया करते हैं। कभी हम भद्दी चीज़ों को लेकर प्रतिक्रिया करते हैं, कभी हम आक्रामक चीज़ों को लेकर प्रतिक्रिया करते हैं। किसी न किसी चीज़ को लेकर आप प्रतिक्रिया करते हैं। उदाहरण के रूप में मेरे सम्मुख यहाँ इन तीन सुन्दर पात्रों में पुष्प रखे गए हैं। अब लोग कहेंगे, हे परमात्मा! पता नहीं इन लोगों ने कितने पैसे खर्च किए होंगे। परमात्मा जानते हैं उनके पास ये धन कहाँ से आया? उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए था, इन्होंने आयकर भी दिया है या नहीं? इस प्रकार वे ये बातें करने लगेंगे जिनका इन फूलों के सौन्दर्य और आनन्द के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। इसी प्रकार मस्तिष्क की सारी प्रक्रिया चलती रहती है और इसी प्रकार हम तनाव में फँसते चले जाते हैं। हम आनन्द नहीं ले पाते। हम क्यों नहीं आनन्द ले पाते? कारण ये है कि हम आनन्द के स्रोत से जुड़े हुए नहीं हैं। मान लीजिए ये यन्त्र (Mike) शक्ति स्रोत से जुड़ा हुआ न हो तो इसका क्या लाभ है? इसी प्रकार हम भी सदैव सोचते रहते हैं और इस प्रकार से चित्त में डालते हैं कि ये प्रतिक्रिया करता रहता है। किसी भी चीज़ को देखकर हमें लगता है कि हम प्रतिक्रिया करें और

यदि कोई प्रतिक्रिया नहीं करता तो लोग सोचते हैं कि इसमें यह बात समझने की योग्यता ही नहीं है।

कुण्डलिनी की इस जागृति को आत्म–साक्षात्कार कहते हैं। ईसा मसीह ने भी कहा था, "स्वयं को पहचानो।" उन्होंने यह बात स्पष्ट कही थी। सभी ने यह बात कही, ऐसा नहीं है कि मैंने ही कही। अपने अन्दर प्रवेश किए बिना हम सूक्ष्मता में नहीं जा सकते। इस कार्य को करने के लिए परमात्मा ने त्रिकोणाकार अस्थि में कुण्डलिनी को स्थापित किया है। यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। छः चक्रों में से इसका उत्थान होता है। ये चक्र शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक अस्तित्व के लिए जिम्मेदार हैं तथा आध्यात्मिक उत्थान के लिए भी, और कुण्डलिनी इस सब में से गुजरती है। सर्वप्रथम यह इनका समन्वय करती है, दूसरे इनको ज्योतिर्मय करती है। यह इनका पोषण भी करती है। इस प्रकार से आपको पूरी तरह से सन्तुलित करके आपको पूर्णतः स्वस्थ करती है। मैं आपको बताना चाहूँगी कि सुबह से शाम तक जिस प्रकार का कार्य आप करते हैं, क्योंकि आप बहुत परिश्रमी हैं, आपका चित्त सदैव अपने कार्य पर होता है और किसी भी प्रकार से अपनी योजनाओं को फलीभूत करने के लिए आप लगे रहते हैं। ऐसा करने का प्रभाव आप पर क्या पड़ता है? आइए इसे देखें।

इसके परिणामस्वरूप सर्वप्रथम पिंगला नामक आपकी दाईं नाड़ी अत्यधिक उत्तेजित होकर थक जाती है। हर समय आप इसे सोच विचार के लिए और भविष्यवादी योजनाओं के लिए इस्तेमाल करते हैं। सभी भविष्यवादी लोग इसके कारण पीड़ित हैं क्योंकि यह शक्ति है, यद्यपि चिकित्सा विज्ञान इसके विषय में कुछ नहीं जानता। परन्तु हम जानते हैं कि यह दाईं अनुकम्पी प्रणाली (Right Sympethatic Nervous System) है। यह अत्यधिक उत्तेजित हो उठता है और इसकी उत्तेजना इससे सम्बन्धित सभी चक्रों की कार्यशक्ति को दुर्बल कर देती है। इसके कारण प्रभावित अवयवों में सर्वप्रथम ज़िगर (Liver) है। ज़िगर एकदम उत्तेजित हो उठता है। ज़िगर के उत्तेजित होने के क्या चिन्ह हैं? इसके कारण आपको भूख नहीं लगती और कब्ज रोग हो जाता है। ये प्रभाव तो केवल उस स्थिति में होता है जब दुर्बलता बहुत ही निम्न स्तर की हो। ज़िगर का कार्य शरीर की ऊर्जा को रक्तसंचार में लाने का होता है। ज़िगर जब दुर्बल हो जाता है तो वह इस कार्य को नहीं कर पाता और यह गर्मी फैलती ही चली जाती है। ज़िगर से यह गर्मी हृदय को जाती है या उससे भी पहले फेफड़ों को। ऐसे व्यक्ति को गम्भीर किस्म का दमा रोग हो सकता है। सहजयोग में दमा को पूर्णतः ठीक किया जा सकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं है। परन्तु इसके लिए पहले आपको आत्मसाक्षात्कारी होना

पड़ेगा। ज़िगर की गर्मी जब बाईं ओर को जाती है तो इक्कीस वर्ष का टेनिस खेलने वाला युवक भी हृदयाघात का शिकार हो सकता है। ज़िगर की ये गर्मी बड़ी उम्र के परिश्रमी व्यक्ति के लिए भी घातक हो सकती है। ऐसे व्यक्ति को जो अपनी चिन्ता नहीं करते। अपनी उपेक्षा करने वाले व्यक्ति को अचानक हृदयाघात हो सकता है। सरकारी नौकरों में ये आम रोग है क्योंकि वो इस बात की चिन्ता ही नहीं करते कि वे अपनी कितनी शक्ति इस कार्य में लगा रहे हैं। हमारे अन्दर एक चक्र ऐसा है (दायां स्वाधिष्ठान) जो ज़िगर की देखभाल करने के साथ मस्तिष्क को ऊर्जा प्रदान करता है। हर समय यदि आप विचार धुन्ध में फँसे रहते हैं तो ज़िगर की स्थिति और खराब हो जाती है। बहुत अधिक सोचने वाले व्यक्ति को ज़िगर की समस्या हो सकती है। परन्तु चीज़ें इसी के साथ ही समाप्त नहीं हो जातीं। गर्मी वहाँ से अग्नाश्य की ओर चली जाती है और व्यक्ति को शक्कर रोग (Diabeteas) हो सकता है। इसकी आप कल्पना करें। आप यदि सोचना बन्द कर दें तो शक्कर रोग को आसानी से ठीक किया जा सकता है। परन्तु विचारों को रोकना बहुत बड़ी समस्या है। इसके बारे में मैं आपको बाद में बताऊंगी। यहाँ से बढ़कर गर्मी प्लीहा (spleen) पर आक्रमण करती ह और व्यक्ति को रक्त कैंसर तक हो सकता है। ज़िगर की गर्मी आपके गुर्दों (Kidneys) पर भी आघात कर सकती है। इसके प्रभावस्वरूप व्यक्ति को भयानक कब्ज रोग हो सकता है क्योंकि उसके नीचे की आँतड़ियाँ कार्य नहीं करती। अत्यधिक कार्य करने से भविष्यवादी जीवन के कारण हम अपने अन्दर ये गर्मी उत्पन्न करते हैं। इसे रोकने का कोई और साधन नहीं है। आप लोग भी सरकारी कर्मचारी हैं। कर्त्तव्यपरायण लोग हैं और बहुत ही परिश्रमपूर्वक कार्य करना चाहते हैं। सदैव यही सोचते हैं कि किस प्रकार स्थिति को सुधारा जाए और इस प्रकार देश के लिए कार्यरत रहते हैं। परन्तु इसके साथ–साथ यह भी देखना चाहिए कि हमारे अन्दर किस प्रकार असन्तुलन आ रहे हैं। हम आक्रामक हुए जा रहे हैं और इससे भी कैंसर रोग हो सकता है। मैं आपको बताऊंगी कि किस तरह? मुझे खेद है कि हमारी बातचीत शारीरिक रोगों की तरफ चली गई है। परन्तु बाएं और दाएं अनुकम्पी से ये दोनों चक्र जब एकरूप होते हैं तो एक चक्र का सृजन करते हैं। जब आप दाईं ओर को बहुत अधिक कार्य किए चले जाते हैं और इस प्रकार दाईं ओर की शक्ति को बहुत अधिक खर्च करते हैं तो अचानक कोई आघात आपको लग सकता है। आपकी बाईं नाड़ी पर कोई ऐसा आघात लग सकता है जिसके कारण यह टूट जाती है और पूर्ण (Whole) के साथ आपका सम्बन्ध टूट जाता है। पूर्ण के साथ इस सम्बन्ध के टूटते ही आपकी दाईं और बाईं नाड़ियाँ एक दूसरे की पूरक नहीं रहतीं, परस्पर अहितकर बन

जाती हैं और आपके कोषाणु भी इसी प्रकार से व्यवहार करने लगते हैं और परिणाम कैंसर रोग होता है। सहजयोग में आप कैंसर को भी ठीक कर सकते हैं। ऐसा करना कठिन नहीं है। परन्तु सर्वोत्तम चीज़ ये है कि आप आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके इसमें स्थित हो जाएं। सभी पुरुषों व स्त्रियों के लिए यह उत्तम बात है।

दाईं नाड़ी के विषय में मैंने केवल एक बात बताई। सबसे बुरी बात तो यह है शरीर के दाएं भाग में पक्षाघात हो सकता है। हाल ही में हमारे एक बहुत अच्छे डॉक्टर थे जो सहज के लिए कार्य कर रहे थे। मैंने उनसे कहा श्रीमन अब आप वृद्ध हो गए हैं। आपको चाहिए कि आप दिन के समय भी विश्राम करें, शाम को जल्दी सो जाएं और बहुत अधिक परिश्रम न करें? आपकी उपस्थिति ही काफी है। पर उन पर मेरी बात का कोई अधिक प्रभाव न हुआ। परिणामस्वरूप उन्हें अधरांगघात (Paraplegia) हो गया और उनका दायां तथा बायां हाथ पूरी तरह से अशक्त हो गए। यह एक अलग बात है कि अब वो ठीक हो गए हैं। परन्तु प्रकृति अपना हिस्सा माँगती है और इसी कारण से वह व्यक्ति अधरंगघात का शिकार हुआ। जो लोग इस प्रकार से पागलों की तरह से कार्य करते हैं उनके सिर के बाएं गोलार्ध पर दुष्प्रभाव पड़ता है और उनके शरीर के दाएं हिस्से को लकवा मार जाता है। आप क्योंकि ज़रूरत से अधिक कार्य करते हैं तो प्रकृति इसे सुधारने का प्रयत्न करती है।

अब मुख्य बात ये है कि किस तरह से इसे कार्यान्वित किया जाए और किस तरह सन्तुलित किया जाए। आपकी कुण्डलिनी जब उठती है तो उनका संगठन करती है, पोषण करती है, ठीक करती है और अन्ततः आपको स्रोत से, शक्ति के सागर से जोड़ती है। तब आपके साथ क्या होता है? कुछ नहीं। तब जीवन अथक हो जाता है आप कभी भी थकते नहीं, सदैव शक्ति से भरे रहते हैं और शक्ति आपसे बहती रहती है। केवल शक्ति ही नहीं, ज्ञान भी, पूर्ण ज्ञान भी आपसे प्रसारित होता रहता है क्योंकि अब आपकी अंगुलियाँ चक्रों का अनुभव करने लगती हैं और अपनी अंगुलियों के सिरों पर आप चैतन्य लहरियाँ महसूस करने लगते हैं। अब आप समझ सकते हैं कि कौन से चक्र पकड़ रहे हैं। इन्हें ठीक करना यदि आप सीख लें तो अपने तथा अन्य लोगों के चक्रों को आप ठीक भी कर सकते हैं।

दूसरा परिवर्तन जो आपमें घटित होता है वह है आपके व्यक्तित्व का सामूहिक व्यक्तित्व में परिवर्तित हो जाना। आप सामूहिक व्यक्ति बन जाते हैं। जैसे इन दिनों हमने देखा है कि बहुत से स्नातक हैं और बहुत से साफ्टवेयर विशेषज्ञ और कहीं पर भी हम अपने सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। यही प्रणाली हमारे अन्तर्रचित भी है। किसी के

बारे में भी हम पता लगा सकते हैं कि उसमें क्या समस्या है और अपने स्थान पर बैठे हुए ही उसे ठीक कर सकते हैं। ये सब हो सकता है परन्तु आपको उस स्थिति तक विकसित होना होगा। इसके लिए आपको बहुत अधिक समय की भी जरूरत नहीं है। एक बार जब कुण्डलिनी जागृत हो जाती है–यह एक नन्हें बीज के अंकुर की तरह से होती है। यह अंकुर यदि पेड़ बन जाए तो आप हैरान होंगे कि व्यक्ति का पूर्ण परिवर्तन हो जाता है और हमारे अन्दर विद्यमान षड्रिपु लुप्त हो जाते हैं। उनसे मुक्त होकर आप आत्मविश्वास से परिपूर्ण हो जाते हैं, आपके अन्दर की आक्रामकता शान्त हो जाती है और अन्य लोगों के दोष आप नहीं देखते, साक्षी बन जाते हैं। बिना प्रतिक्रिया किए आप साक्षी रूप से सभी चीज़ों को देखने लगते हैं। मस्तिष्क से आप ऊपर उठ जाते हैं। प्रतिक्रिया ही सभी तकलीफों का कारण है।

अब आपको सच्चा ज्ञान प्राप्त हो जाता है। ये सभी मानसिक प्रतिक्रियाएं बिल्कुल अनावश्यक हैं। आप वास्तव में जान जाते हैं कि कहाँ दोष हैं? क्या चीज़ ठीक होने वाली है? समाधान क्या है? अब आप सब जान जाते हैं। आप सब कुछ जान जाते हैं क्योंकि आप स्रोत से जुड़े हुए हैं। स्रोत से एकरूप हैं। स्रोत से जुड़े बिना आपका व्यक्तित्व अधूरा होता है। आपको हैरानी होगी कि सभी अवतरणों ने इसके बारे में बातचीत की। मोहम्मद साहब ने कहा कि पुनर्जन्म के समय आपके हाथ बोलेंगे। इसका अर्थ क्या है? यह इस बात का प्रमाण है कि आपने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है।

अब स्थिति अत्यन्त सहज है और कार्यान्वित हो रही है, मैं नहीं जानती क्यों? सम्भवतः यह घोर कलियुग है जिसके कारण यह सब कार्यान्वित होने लगा है। हजारों लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर रहे हैं। मेरी अनुपस्थिति में भी सहजयोगी बहुत से लोगों को आत्मसाक्षात्कार देते हैं। संसार में जो घटित हो रहा है वह अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यह आप लोगों के लिए है। इसके बदले आप कोई धन नहीं दे सकते, कुछ नहीं कर सकते। यह तो स्वतः है। सर्वशक्तिमान परमात्मा ने इसकी स्थापना की है–कुण्डलिनी की। केवल इतनी सी आवश्यकता है कि कोई आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति इसे जागृत करे, वैसे ही जैसे एक जलता हुआ दीपक दूसरे दीपक को प्रज्जवलित कर सकता है। केवल इतनी सी बात है। परन्तु यदि आपने दूसरे दीपक को प्रज्जवलित कर दिया है और उसे स्थापित कर दिया है तो वह दीपक भी वही कार्य कर सकता है। सहजयोग इसी प्रकार फैला है। इन सब देशों में मैं स्वयं नहीं गई। अधिक से अधिक बीस देशों में गई हूँगी। परन्तु सहजयोग किस प्रकार फैला है? इसने अत्यन्त सुन्दर कार्य किया

है। यह हमारे देश का विज्ञान है, इसका उद्भव हमारे देश से है। निःसन्देह अन्य लोगों ने भी इसके विषय में बात की। विलियम ब्लेक ने इसके बारे में बताया। फिर भी मैं कहूँगी कि मूलतः यह ज्ञान भारतीय है। भारतीयों को यह ज्ञान था परन्तु वे सामूहिक आत्मसाक्षात्कार न दे पाए। मैं एक ऐसा तरीका विकसित करना चाहती थी जिसके द्वारा मानव के संयोग और क्रमपरिवर्तन को समझकर मैं सामूहिक साक्षात्कार के इस कार्य को कर सकूं, क्योंकि व्यक्तिगत स्तर की किसी भी खोज का अधिक महत्त्व नहीं होता और मेरी इस खोज ने कार्य कया। आपके प्रेम एवं करूणा से यह कार्य कर रही है। कुछ लोग अपनी दोष भावना के कारण इसे नहीं पा सकते। वो कहने लगते हैं, ओह! मैंने ये अपराध किया है, मैंने वो अपराध किया है। जो हो गया वो हो गया, समाप्त। अब पूरा जीवन आप क्यों उसकी चिन्ता लगाए हुए हैं? ये एक चीज़ है। इस प्रकार की भावना वास्तव में, प्रेम के इस चक्र के लिए, बाईं विशुद्धि के लिए बहुत हानिकर है। इसके कारण कुण्डलिनी नहीं उठती। अतः आपको दोष भावना ग्रस्त नहीं होना है। दोष स्वीकृति (Confession) की कोई आवश्यकता नहीं है। केवल इतना सोचें कि आप मानव हैं और सभी मानव आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर सकते हैं। मैं आपको बता दूं कि ये प्रेम की शक्ति है। बौद्धिक योग्यता की शक्ति नहीं है। प्रेम की इस शक्ति में यदि आप विश्वास करते हैं तो स्वयं को भी प्रेम करें। स्वयं को क्षमा कर दें। अपने अन्दर दोष भाव न रखें। स्वयं को क्षमा करने के पश्चात् अन्य लोगों को भी क्षमा कर दें क्योंकि वो भी अज्ञानान्धकार में है। उनमें भी समझने की योग्यता अभी नहीं है। अतः सबको क्षमा कर दें। तार्किक रूप से भी यदि हम देखें तो क्षमा करने या न करने वाले हम कोई नहीं। क्षमा न करके आप अपनी हानि कर रहे हैं और जिन लोगों ने आपको कष्ट पहुँचाया है उनके हाथों खेल रहे हैं। अतः क्षमा कर देना ही सर्वोत्तम बात है। इस पर क्षमा के इस चक्र को खोलने में आप बहुत मदद करते हैं। कुण्डलिनी के उत्थान में ये दो चक्र बहुत बड़ी रूकावट है। अतः आपको स्वयं को तथा अन्य लोगों को क्षमा करना होगा। केवल इतना ही। अपने हृदय में मात्र कह भर दें कि मैंने स्वय को क्षमा किया और अन्य लोगों को भी क्षमा किया। आपको केवल विश्वस्त होना है कि किसी भी चीज़ के लिए आप स्वयं को दोषी नहीं ठहराएंगे। आपने कोई अपराध नहीं किया। आपने क्या किया हैं? कोई अपराध यदि आपने किया होता तो आप जेल में होते। परन्तु आप तो यहाँ पर हैं। इसलिए स्वयं को क्यों दोषी मानना है?

कुछ लोग सोचते हैं कि जब तक हम बहुत अधिक धार्मिक नहीं होंगे, जब तक हम बहुत अधिक कर्मकाण्ड नही करेंगे हमारा उत्थान नहीं हो सकता। ऐसी बात नहीं है,

बिल्कुल भी नहीं। हम इन चीज़ों में फँसे हुए हैं अतः आप इन्हें भूल जाएं। आप चाहे हिन्दू हों, मुसलमान हों या इसाई, चाहे आपने बहुत सी पूजाएं की हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। सभी की कुण्डलिनी जागृत होती है। आपके चित्त का परमात्मा पर होना ही आपको शुद्ध रख सकता है। परन्तु ऐसा भी तभी होगा जब कुण्डलिनी की जागृति हो जाएगी।

मैं आपको एक अन्य चीज़ अवश्य बताना चाहूँगी। महिलाओं के प्रति सदैव मेरी सहानुभूति रही है। दीन दुखी महिलाओं, लड़कियों तथा बच्चियों के लिए। जैसे इन्होंने बताया, मैंने महिलाओं की सहायता के लिए एक संस्था भी आरम्भ की है। मुझे लगता है कि हमारे देश में महिलाओं के पास सम्पत्ति नहीं होती। जो भी कुछ उनके पास है वह कानून के कारण है और कानून की सहायता की जब आवश्यकता होती है तो वह बड़ी ही अभिशप्त स्थिति होती है। फिर भी लोग तलाक माँगते चले जाते हैं और इस प्रकार पारिवारिक जीवन नष्ट हो रहा है। अतः पुरुषों को चाहिए कि वे अपने अन्दर महिलाओं के प्रति सम्मान की भावना विकसित करें। महिलाओं का प्रतिशत निश्चित रूप से पुरुषों से ज्यादा है। यदि आप लोग महिलाओं का सम्मान नहीं करते तो वास्तव में पूरे देश की संस्कृति को नष्ट कर रहे हैं। हमें निश्चित रूप से महिलाओं का सम्मान करना होगा। आप आयकर अधिकारियों से मेरी प्रार्थना है कि आपका जो कानून है उसके अनुसार आप स्त्री धन के पीछे पड़े हुए हैं। मैंने वित्तमंत्री से इसके विषय में बात की मगर उन्होंने कोई ध्यान न दिया। स्त्री धन को छूना पाप है। फिर भी इस कार्य को बहुत ही बुरी तरह से किया जा रहा है। आप सभी लोग बड़े–बड़े अफसर हैं, आप लोग ही लोगों के घरों में जाते हैं। हमारा एक पड़ोसी जौहरी था। उसके घर पर इन लोगों ने छापा मारा। सभी सोफों आदि को बिस्तरों को इन्होंने फाड़ डाला। सभी कुछ किया। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार से सब करते हैं और उस समय उस घर में कोई भी पुरुष न था केवल महिलाएं थीं। तब उन्होंने अलमारियों की तलाशी ली। यह तो एक प्रकार से हिटलर जैसा दृष्टिकोण है। उन्हें वहाँ से कुछ भी नहीं मिला परन्तु उन्होंने धमकी दी कि यदि इस मामले की रिपोर्ट की तो वे दोबारा आकर सभी कुछ जब्त कर लेंगे। कानूनन आप तलाशी ले सकते हैं परन्तु इस प्रकार की ज्यादतियों को आपको देखना चाहिए। मैं सोचती हूँ कि आपको महिलाओं के आभूषण लेने ही नहीं चाहिए। बेचारी महिलाएं बैंक आदि के विषय में कुछ नहीं जानती। मैं स्वयं बैंक के विषय में कुछ नहीं जानती। गहने ही उनका बैंक है। किसी ने मुझसे कहा कि इस प्रकार महिलाएं सारे काले धन का उपयोग करेंगी। परन्तु अब तो काला धन भी सारा बाजारों मं पहुँच गया है

कोई इसे गहनों के रूप में नहीं रखना चाहता। गहने ही भारतीय महिलाओं का सहारा हैं। जब जब भी मैं ऐसी किसी महिला से मिलती हूँ तो मुझे रूलाई आ जाती है। बम्बई में हमारे एक पड़ोसी थे। उनके यहाँ से तीन महिलाएं आईं और उन्होंने बताया उनके घर पर छापा पड़ा और आयकर वाले लोग उनके भी गहने ले गए। मैंने पूछा कि आपने इन गहनों की घोषणा क्यों नहीं की थी। कहने लगी हमारे पति ऐसा नहीं करने देते, वो सब शराबी हैं और शराब के लिए गहने बेच देते हैं। अब हमारा सब कुछ चला गया है। मैंने कहा तुमने अपने घर पर रखे क्यों? बैंक में क्यों नहीं रखे? जब भी हमें पैसों की जरूरत होती है तो हम ये गहने बेच देते हैं और जरूरत की चीज़ें ले लेते हैं। यही हमारा बैंक है। तो भारतीय जीवन का यह पक्ष भी हमें समझना चाहिए। हम पश्चिमी महिलाएं नहीं हैं। हम भारतीय महिलाएं हैं। परन्तु हैरानी की बात है विश्व के किसी देश में भी नहीं, रूस में भी नहीं, गहनों पर कोई कर नहीं है। हमारे देश में तो गहनों का उद्योग है। यहाँ पर अत्यन्त सुन्दर एवं सृजनात्मक कलाकार हैं। महिलाओं को अपने गहने रखने दें। उस पर आयकर क्यों लगाना हैं? इनकी घोषणा करना बहुत ही कठिन काम है। कानून के अनुसार इन गहनों का पंजीकरण कराना पड़ता है। अपनी बेटी को भी यदि कुछ देना है तो आयुक्त के पास जाकर उसकी आज्ञा लेनी पड़ती है। यह सब करने के लिए किसके पास समय है? अतः मेरी ये विनम्र प्रार्थना है कि आप लोग इसके विषय में सोचें और महिलाओं की सहायता के लिए इस थोड़े से धन की आज्ञा दें।

मैं आपको बताना चाहूँगी कि स्वतन्त्रता संग्राम के समय मेरी माताजी ने हम लोगों के लिए रखे हुए गहने भी महात्मा गाँधी को दे दिए थे। यही उनकी सम्पदा है, यही उनकी सम्पत्ति है, यही उनका धन है। हर समय ये उन्हें उपलब्ध होता है। गाँव की महिलाओं को तो बैंक आदि के बारे में बिल्कुल भी ज्ञान नहीं होता। इस विषय में आपसे बात करते हुए मुझे संकोच हो रहा था। यह धर्म कार्य है परन्तु आप गहनों के कारण महिलाओं को परेशान न करें। जिस प्रकार अपराधी मान कर उनसे व्यवहार किया जाता है उसके कारण पहले से ही वे परेशान हैं। इस देश में गहना पहनना उनकी मजबूरी है। इसके बिना उनका काम नहीं चल सकता। यह देश महिलाओं की शक्ति का सम्मान करता है। ऐसा करने से आपको भी बहुत से कष्टों और चिन्ताओं से मुक्ति मिलेगी। आपके कर्मचारी रातों को जाकर लोगों को परेशान करते हैं और फिर आपके पास शिकायत आती है और आपकी परेशानी का कारण बनते हैं। इस विषय में कुछ हो सके तो मैं बहुत आभारी हूँगी। भारतीय महिलाओं के दुख दर्द के विषय में बात करना बहुत आवश्यक था क्योंकि वे तो पहले से ही दीन–दुखी, पीड़ित है और सताई हुई हैं।

हां, एक बार जब आपकी कुण्डलिनी जागृत हो जाएगी तो आप सब कुछ समझ जाएंगे और पूरे देश के लोगों के प्रति आपके हृदय में प्रेम जाग उठेगा। मैं जानती हूँ कि विश्व में बहुत सी समस्याएं हैं। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार इनका समाधान किया जाए। उदाहरण के रूप में हमारा एक स्कूल है, महाराष्ट्र में भी हमने एक स्कूल शुरू किया है। इस प्रकार की सात योजनाएं चल रही हैं। परन्तु महिलाओं की समस्या सबसे गम्भीर है। वे असहाय हैं और उनकी क्षतिपूर्ति करने का कोई मार्ग नहीं सूझ रहा है। भारत की शक्ति होते हुए भी वे बहुत कष्ट में हैं। कुण्डलिनी भी एक महिला है। वह पुरुष नहीं है। सभी अवतार हुए परन्तु कुण्डलिनी आदि शक्ति का प्रतिबिम्ब हैं। वे शक्ति हैं। हम शक्ति पुजारी हैं परन्तु जिस प्रकार हम महिलाओं से व्यवहार कर रहे हैं वह अत्यन्त आश्चर्यजनक है। हमें समझना चाहिए कि यदि महिलाएं जाग जाएं तो आपको कितनी शक्ति प्राप्त हो जाएगी। शक्ति जिस देश में भी मिली उसका माध्यम महिलाएं थीं। किसी के भी जीवन को आप देखें चाहे वे महात्मा गांधी हो या शास्त्री हो। वे अपनी पत्नियों से कितना प्रेम करते थे और उनकी कितनी चिन्ता करते थे! हैरानी की बात है कि अपनी जनसंख्या के इतने बड़े भाग की हम उपेक्षा कर देते हैं। अब मैंने यह संस्था आरम्भ की है। मैं इन सबको आत्मसाक्षात्कार दूंगी ताकि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके ये विविध कलाएं सीख कर अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। **आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके इसमें स्थापित हो जाने से व्यक्ति की योग्यता, विचार शक्ति और सूझ–बूझ इतनी बढ़ जाती है कि आप आश्चर्य चकित रह जाते हैं।** कई बार मेरे पति मुझसे पूछते हैं कि किस प्रकार तुम यह सब कुछ चलाती हो। मैं कहती हूँ कि मैं नहीं जानती, बस मैं सब जान जाती हूँ। आप सब जान जाएंगे कि किस प्रकार कार्य प्रबन्ध करना है और इसके पीछे अन्य लोगों का प्रेम ही मुख्य चीज़ है। यह सारा कुछ अत्यन्त सुन्दर रूप से कार्यान्वित होगा। आपका जीवन बहुत सुन्दर हो जाएगा और आप इसका आनन्द लेंगे। सारा लालच और षड्रिपु आपको छोड़ देंगे। इस आधुनिक युग में यह आवश्यक है कि आप सब आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करें। आखिरकार हम सब भारतीय हैं। हमारी संस्कृति ऐसी है कि हम आत्मसाक्षात्कार के लिए बने हैं। अन्य लोगों से हम बहुत भिन्न हैं। भारत देश में महिलाओं ने ही देश की संस्कृति की रक्षा की है।

आत्मसाक्षात्कार द्वारा आप महिलाओं की रक्षा कर सकते हैं और सूझ–बूझ देकर उनकी सहायता कर सकते हैं। उन्हें परेशान नहीं करें। परेशान करना अनुचित है महिलाओं को परेशान करना पूरी तरह से वर्जित कर दें। वे तो पहले से ही बहुत परेशान हैं। वे नहीं जानती कि वे क्या करें! यह कानून भी

उनकी कोई सहायता नहीं करता क्योंकि सत्ता तो पुरुषों के हाथ में है। पुरुषों को चाहिए कि महिलाओं का मूल्य समझें, उनके प्रेम की शक्ति को समझें। तभी यह कार्यान्वित होगा। मैं यह इसलिए नहीं कह रही कि मैं स्वयं एक महिला हूँ। वास्तव में जो मैंने देखा है वही बता रही हूँ कि हमने नारीत्व के साथ कितना अन्याय किया है।

अब कुण्डलिनी की जागृति के लिए हम केवल दस मिनट का समय लेंगे और आपको आत्मसाक्षात्कार मिल जाएगा। इसके सिद्धांतों के विषय में ग्रन्थ लिखे गए हैं जिन्हें आप पढ़ सकते हैं। पर सबसे अच्छी बात यह है कि आप आत्मसाक्षात्कार को पा लें। परन्तु आत्मसाक्षात्कार किसी पर थोपा नहीं जा सकता। हृदय से आपको इसके लिए प्रार्थना करनी होगी। कुण्डलिनी शुद्ध इच्छा शक्ति है। यही वास्तविक इच्छा है, बाकी सब इच्छाएं निरर्थक हैं। आज व्यक्ति एक चीज लेना चाहता है कल दूसरी। इसका कोई अन्त नही होता। आधुनिक अर्थशास्त्र का नियम है कि इच्छाओं का कभी अन्त नहीं होता। परन्तु आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् जो कुछ भी प्राप्त होता है उससे आप सन्तुष्ट हो जाते हैं। हर समय आप भागते नहीं रहते। सदैव शान्ति और आनन्द के साम्राज्य में बने रहते हैं। आपके साथ भी यही घटित होना चाहिए।

मैं सदैव कहती हूँ कि सरकारी अधिकारी हमारे देश की रीढ की तरह से हैं। वही लोग देश की देखभाल करते हैं। उनके बिना कुछ नहीं हो सकता बर्तानवी शासन ने यदि कुछ अच्छा हमें दिया तो वह था सेवाओं का विचार। उनकी चलाई हुई शैली के कारण ही आप देश की नींव हैं। आप कभी बीमार न हों, कभी आपको समस्या न हो, इसलिए आपका आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लेना आवश्यक है। आपकी संस्था और कमिश्नर साहब के प्रति मैं आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे यहाँ आमान्त्रि किया।

परमात्मा आपको धन्य करे।

सहजयोगियों को भूकम्प का पूर्वाभास

प्रेम चन्द गुप्ता (एडवोकेट), बहादुर गंज, उज्जैन, मध्य प्रदेश

सेवा में,

श्रीमाताजी,

श्रीमाताजी ने अपनी करुणा और प्रेम सभी पर बिखेरते हुए उन्हें पार उतारा है। हम भी श्रीमाताजी के ऋणी होकर उनके द्वारा दिया हुआ सुखी जीवन गुजार रहे हैं। हम उनका धन्यवाद तक अदा करने में अपने आपको असमर्थ पाते हैं, उनके ऋणों को चुकाना तो संभव ही नहीं है। श्रीमाताजी की अनुकंपा से ही उज्जैन नगरपालिका निगम फोन समिति 2 का सदस्य और अखिल भारतीय मानव अधिकार संरक्षण परिषद् संभाग उज्जैन संभाग उपाध्यक्ष के साथ–साथ उपरोक्त पदों पर आसीन श्रीमाताजी ने कराया है। उपरोक्त पते पर ही प्रति शनिवार को शाम 7 बजे से सहजयोग ध्यान केन्द्र के द्वारा श्रीमाताजी मानव का उत्थान करने में निरंतर अग्रसर हैं। श्रीमाताजी की कृपा से ही यह ताजा अनुभव लेखबद्ध करने का मामूली प्रयास कर रहा हूँ, वैसे अनुभवों को शब्दों और वाक्यों में उकेरना बहुत ही कठिन कार्य है फिर भी कोशिश कर रहा हूँ।

25 जनवरी 2001 गुरूवार को ध्यानावस्था में लगा कि पृथ्वी हिल रही है और पृथ्वी के हिलने के कारण मैं भी घड़ी के पैण्डुलम की तरह हिल रहा हूँ, जब कुछ देर तक हिलना बन्द नहीं हुआ तो सहसा मुंह से निकला–यह भूकंप आ गया क्या? और आँखे खोलकर देखा तो सब कुछ सामान्य था, कुछ नहीं हिल रहा था। फिर से ध्यान करने लगे और फिर वही पृथ्वी का हिलना व अपने आप का हिलना महसूस होने लगा और कुछ समय बाद यह हिलना बंद हो गया। ध्यान पूरा होने के बाद हिलने वाली घटना ही भूल गये और बात आयी गई हो गई। उसी शाम को जब पुत्री कुमारी विनीता, कक्षा 11वीं, ध्यान कर रही थी तो उसे भी ऐसा ही महसूस हुआ और जब उसने भी आँखे खोलकर देखा तो सब कुछ सामान्य था। बाहर सड़क पर भी सब कुछ सामान्य था, कहीं कुछ नहीं हिला था।

25 जनवरी, 2001 को कहीं भी भूकम्प नहीं आया, कहीं भूकम्प आना रिकार्ड भी नही हुआ है। भूकम्प दिनांक 26 जनवरी, 2001 की सुबह करीबन 8–55 बजे आया है। लेकिन हमें तो इस भूकम्प के आने का अहसास भी नहीं हुआ जबकि आसपास के

लोग घरों से बाहर हो गये थे और उनके घरों के सामान तक गिर गये थे। किन्तु हमें तो यह भी पता नहीं चला कि लोग बाहर निकल गये है। वह तो जब हम ऑफिस जाने के लिये नीचे सड़क पर आये तो मालूम पड़ा कि भूकम्प आया है और लोगों में अफरा–तफरी मच गई है। इस प्रकार भूकम्प 26 जनवरी की सुबह आया जिसकी पूर्व सूचना श्रीमाताजी ने हमें एक दिन पहले 25 जनवरी को ही सुबह दे दी। जबकि विशेषज्ञों का कहना है कि विश्व में ऐसी कोई तकनीक नहीं है जिससे कि भूकम्प आने की पूर्व सूचना मिल सके। ऐसी दशा में क्या यह आश्चर्यजनक किन्तु सत्य नहीं है कि श्रीमाताजी की तकनीकों के आगे विश्व की, मानव मात्र की तकनीक मायने ही क्या रखती है?

इतना ही नहीं उसके बाद दूसरे दिन 27 जनवरी को मध्य–प्रदेश शासन का पत्र जिला प्रशासन को मिला कि 24 घण्टों में पुनः भूकंप आ सकता है और इस पत्र के बढ़–चढ़कर अफवाह के रूप में फैल जाने से 2 बजे से दिन से ही लोग घरों से बाहर होकर मैदानों में चले गये तथा सारे शहर में अफरा–तफरी मच गई। हमारे घर यानी उक्त सहजयोग सेंटर के आसपास के लोग भी मैदान में जाने लगे और हमें भी लोगों ने घर से बाहर निकलने को आग्रह किया। लेकिन उस दिन शनिवार होने के कारण शाम को सेंटर प्रारंभ होना था। इन उपरोक्त परिस्थितियों के कारण जब श्रीमाताजी से वायब्रेशंस से पूछा गया तो भूकम्प नहीं आना ज्ञात हुआ और भूकंप नहीं आने के लिये श्रीमाताजी से प्रार्थना भी की और इसी कारण आसपास के लोगों को भी आश्वस्त किया जिससे आसपास की बस्ती खाली होने से और अफरा–तफरी मचने से, श्रीमाताजी की कृपा से, बच गई और हर बार की तरह उस दिन सेंटर पर श्रीमाताजी ने ध्यान करवाया।

श्रीमाताजी की कृपा से ही मैं दमा, हाई–ब्लडप्रेशर, बाईं साईड के आधे शरीर के दर्द, पेशाब के बार–बार रुकने, हायपरएसीडिटी, हमेंशा बना रहने वाला सिर व माथे का भारीपन, दर्द, थकान, नर्वसता, जीवन के प्रति निराशा आदि से मुक्त हो गया हूँ। सेंटर पर आने जाने वाले अन्य सहजी जो खूनी बवासीर से पीड़ित थे ठीक हो गये हैं। जिन घुटनों से एक फर्लांग भी नहीं चला जाता था वे अब दौड़ने लगे हैं और रोज मीलों चलते हैं, साइकिल चलाते है, साईकिल पर सामान लादकर लाते हैं, उन्हें काम–धंधा मिल गया है। जिनके पावों में एक्सीडेंट के कारण स्टील की राड़ लगी हुई है वे भी अब तेज चाल से 30 कि.मी. तक चलते है और जरा भी थकान नहीं होती। उनमें इतनी अधिक ऊर्जा बढ़ गई है कि वे थकने का नाम ही नहीं लेते हैं और काम कब, कैसे हो जाता है पता ही नहीं चलता है।

श्रीमाताजी सुबह 5 बजे आवाज देकर हमें ध्यान के लिए उठाती है, ऐसे और भी कई है जिन्हें श्रीमाताजी ध्यान के लिये उठाती है किंतु आँखे खुलने पर सामने कोई नहीं होता है और ऐसा लगता है जैसे सोये ही नहीं थे, यानी एकदम तरोताजा। और जो काम हमें कठिन लगता है या नहीं हो रहा होता है (वैसे तो हमारे सारे काम श्रीमाताजी ही करती हैं) तो हम श्रीमाताजी से फलां काम करने की प्रार्थना करते हैं तो कुछ भी समय में काम बन जाते हैं और हमें कोई प्रयास तक नहीं करने पड़ते अथवा कुछ विशेष नहीं करना पड़ता है। इस प्रकार एक ओर तो हमें आगे दूसरे दिन आने वाले भूकम्प की सूचना पहले ही मिल गई और दूसरा यह कि श्रीमाताजी के बताये अनुसार हमने भी लोगों को भूकंप नहीं आने के बारे में आश्वस्त किया तो बस्ती में अफरा–तफरी मचने से बच गई। इससे भी अधिक कई पूर्व अनुभूतियाँ होती रहती हैं। यह ताजा अनुभूति है जिससे सारा विश्व परिचित है। जबसे सहजयोग में आयें है तब से अब तक नित्य नये अनुभव साकार होते देखें है, कई घटनायें क्रियान्वित होते देखी है, जो इतनी अधिक हैं कि सारी घटनाओं का यहां उल्लेख कर पाना संभव ही नहीं है। केवल हृदय में महसूस ही किया जा सकता है अर्थात चौबीसों घण्टे कुछ न कुछ घटित होता ही रहता है। ऐसी श्रीमाताजी की कृपा है।

श्रीमाताजी से ऐसी ही कृपा हमेशा बनाये रखने की विनम्र प्रार्थना करता हूँ और एक उन्नत, उत्कृष्ट, अच्छा सहजयोगी बनाने की कामना श्रीमाताजी से करता हूं तथा शुद्ध इच्छा करता हूँ कि श्रीमाताजी अपने श्रीचरणों से कभी भी हमें अलग नहीं करें और सदैव हमारे रोम–रोम में विराजमान रहकर विश्व का कल्याण करें। तथा हमसे जो भी सेवा हो वह अधिक से अधिक करवाये।

प्रति,

चैतन्य लहरी में प्रकाशनार्थ

भवदीय प्रेमचन्द गुप्ता एडवोकेट
10015, पुष्पांजली, आर्यसमाज मार्ग, बहादुरगंज, उज्जैन (मध्य प्रदेश)

श्री कृष्ण पूजा

कबैला – 20.8.2000

परम् पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज हम यहाँ श्री कृष्ण की पूजा करने के लिए आए हैं। आप जानते हैं कि सहजयोग में आने से पूर्व भी आप जिज्ञासु थे। भिन्न स्थानों पर आप गए, भिन्न पुस्तके पढ़ीं और आपमें से कुछ तो खो भी गए। उस जिज्ञासा में सम्भवतः आप ये न समझ पाए कि आप क्या खोज रहे हैं। वास्तव में आप स्वयं को पहचानना चाह रहे थे। सभी धर्मों में कहा है, "स्वयं को पहचानिए"। ये एक आम बात है जो सबने कही है। ये बात सभी धर्मों ने निश्चित रूप से कही है कि "स्वयं को पहचानो" क्योंकि स्वयं को पहचाने बिना आप परमात्मा को नहीं जान सकते, आध्यात्मिकता को नहीं जान सकते।

तो स्वयं को पहचानना पहला कदम था जिसके लिए लोगों ने आपके साथ सभी प्रकार चालाकियाँ कीं। उन्होंने आपको भिन्न विधियाँ सिखाई और भिन्न प्रकार से आपको लूटने तथा धोखा देने का प्रयत्न किया। वो सब कुछ हो चुका है। आप सहजयोग में आते हैं और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करते हैं। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने का लक्ष्य क्या है? लक्ष्य परमात्मा को या परमेश्वरी को जानना है। आत्म साक्षात्कार का यही उद्देश्य है। परन्तु आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् आप में क्या घटित होना चाहिए? आपमें से बहुत से लोगों की रुचि नशे आदि व्यर्थ की चीज़ों में समाप्त हो गई है। बेकार की पुस्तकें पढ़ना आपने छोड़ दियाहै। शराब आदि पीने में आपकी रुचि समाप्त हो गई है। परन्तु इतना ही काफी नही है, मात्र इतना काफी नहीं है। इतना तो किसी भी तरह से घटित हो सकता है। परमात्मा को जानने से आपको इस बात का ज्ञान हो जाना चाहिए कि वह क्यों चाहता है कि आप उसे जानें। क्योंकि परमात्मा आपमें अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहता है। वह अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहता है। यही कारण है कि परमात्मा ने आपका सृजन किया। अब वह अपना प्रतिबिम्ब आपमें देखना चाहता है।

देवी की भी यही बात है। देवी ने आपको आत्मसाक्षात्कार दिया है क्योंकि वे आपमें अपना प्रतिबिम्ब देखना चाहती हैं। अतः आपको उस प्रतिबिम्ब के लिए स्वयं को तैयार करना होगा। वह प्रतिबिम्ब अत्यन्त

पावन, सुन्दर, प्रेममय, करुणामय तथा विवेक से परिपूर्ण है। तो व्यक्ति को यह स्थिति प्राप्त करनी होती है जहाँ वे समझ सके कि उसमें विवेक होना आवश्यक है। आपमें यदि विवेक का अभाव है तो आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति नहीं है।

श्री कृष्ण (विशुद्धि) के स्तर पर जब आप पहुँचते हैं तो वे चाहते हैं कि आप विराट या विराटांगना के अंग–प्रत्यंग बन जाएं। विराट के अंग–प्रत्यंग बनकर आप ये न सोचते फिरें कि अब आप पूर्णतः ठीक हो गए हैं। ऐसा आपने कुछ नहीं करना। इसके आगे आप क्या करते हैं वह मुख्य बात है। आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् आपको देखना है कि आपके अन्दर श्री कृष्ण सम विभूतियों (अवतरणों) के जीवन से आया हुआ प्रतिबिम्ब होना चाहिए।

श्री कृष्ण ने बहुत कठिन परिस्थितियों में जन्म लिया। वहाँ से उन्हें गोकुल ले जाया गया जहाँ यशोदा जी ने उनका लालन पालन किया। वहीं पर उन्होंने अपनी लीला का आरम्भ किया। अतः आपको भी विनोदशील होना होगा और विनोद एवं आनन्द की सृष्टि करनी होगी। उन्होंने कभी नहीं कहा कि हिमालय में जाकर किसी बूढे संत की तरह से बैठ जाओ। आपको बच्चों से घुल–मिल जाना चाहिए, उनसे बातें करनी चाहिए और उनसे खेलना चाहिए और आनन्द लेना चाहिए। सारी लीला करते हुए भी वे मार्ग में आने वाली आसुरी शक्तियों को नष्ट कर रहे थे। अपनी विनोद शीलता में रहते हुए उन्होंने ये सब कार्य किया। बचपन में राक्षसों को मारा। बालरूप में भी वे कितने परिपक्व थे इसका अन्दाजा आप उनके पूतनावध तथा दो अन्य राक्षसों के वध से लगा सकते हैं। एक ओर तो वे राक्षसों के वध से लगा सकते है। एक ओर तो वे राक्षसों का वध करते थे और दूसरी ओर गोपियों के साथ खेलते थे, सताते थे और लीला करते थे, क्यों? क्योंकि वो चाहते थे कि सभी प्रकार की लीला और उत्सव होते रहे। एक बार जब प्रलयकारी वर्षा हुई तो उन्होंने गोवर्धन पर्वत को अपनी उंगली पर उठा लिया। लोगों को समझ जाना चाहिए था कि ऐसा करना असम्भव कार्य था। यह तो चमत्कार था। परन्तु श्री कृष्ण अपनी नन्ही उंगली पर पर्वत को उठाकर खड़े रहे, गोप–गोपियों की रक्षा करने के लिए, अत्यन्त सहज रूप से उन्होंने ये कार्य किया। तत्पश्चात् यमुना के जल में उन्होंने कालिया मर्दन किया। ये भयानक सर्प यमुना के जल में जहर फैलाकर लोगों की हत्या कर रहा था। बिना कुछ पूछे तो यमुना के जल में कूद गए और कालिया मर्दन करके उन्होंने लोगों की रक्षा की। कालिया की पत्नी सर्पिणी ने उनसे प्रार्थना की कि वे उसे क्षमा कर दें। ये सारी चीजें दर्शाती हैं कि बिना किसी अहम् के छः सात वर्ष में ये कार्य करने बाल बच्चा कोई सामान्य व्यक्ति न था। अपनी उपलब्धियों के विषय में उन्होंने सोचा तक नहीं, सारे कार्य कर डाले। क्योंकि

वो जानते थे कि वो श्री कृष्ण (अवतरण) हैं।

अतः पहली चीज़ जिसके विषय में आपने सावधान होना है, वह यह है कि आप साक्षात्कारी लोग हैं। आप साधारण रूप से कार्य करने वाले साधारण लोग नहीं है। आप विशेष लोग है जिन्हें सर्वशक्तिमान परमात्मा के गुणों को प्रतिबिम्बित करने के लिए बनाया गया है। आपसे ये आशा नहीं की जाती कि आप जाकर कालिया जैसे असुरों का वध करें क्योंकि आज तो ऐसी स्थिति है कि आपकी हर समय रक्षा की जा रही है। कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता। कोई आपकी हत्या नहीं कर सकता तथा सहजयोगी होने के नाते आपकी देखभाल की जा रही है।

निर्णय लेने के विषय में व्यक्ति का क्या दृष्टिकोण होना चाहिए, यह बात उसे समझनी चाहिए। निर्णय स्वाभाविक (सहज) होने चाहिए। निर्णय लेने के विषय में ढील नहीं करनी चाहिए। तुरन्त जाकर चीज़ों को देखें और श्रीकृष्ण की तरह तुरन्त और सहज रूप से निर्णय लें, जैसे वो नदी में कूद पड़े। इसी प्रकार आपके निर्णय भी अत्यन्त स्वाभाविक होने चाहिएं। मान लो आप एक कालीन खरीदना चाहते हैं, ठीक है, दुकान पर जाएं और सारा कुछ देख लें। जीवन के हर क्षेत्र में आपके निर्णय स्वाभाविक तथा तुरन्त होने चाहिएं। लेकिन मैं तो बिल्कुल भिन्न शैली देखती हूँ। लोग एक-एक दुकान जाते हैं उसकी सूची बनाते हैं, नाप-तोल लेते हैं और घर जाकर कहते हैं कि कल हम इस पर निर्णय लेंगे। सहजयोगी का व्यवहार ऐसा नहीं होना चाहिए। सहजयोगी को अपने निर्णय पूर्णतः स्वाभाविक ढंग से तत्क्षण ले लेने चाहिए। आपको ऐसा होना चाहिए। मान लो कोई व्यक्ति डूब रहा है तो पहली अन्तः प्रेरणा ये होनी चाहिए कि आपको उसे बचाना चाहिए। किस प्रकार आप उसे बचाते है? आप पानी में कूद पड़े क्योंकि आपको तो परमेश्वरी सुरक्षा प्राप्त है। आपको कुछ नहीं हो सकता। अतः पानी में कूद कर उस व्यक्ति की रक्षा करें। इस प्रकार का दृष्टिकोण होना तो कम से कम आवश्यक है। आपका स्वभाव ऐसा होना चाहिए कि आप अत्यन्त स्वाभाविक निर्णय लें। ये सभी चीज़ें परिवर्तित होती है, सभी प्रकार के सोच-विचार, निर्णय के लिए बड़ी-बड़ी गोष्ठी करना आदि चीज़ें आपके लिए नहीं है। रोजमर्रा के जीवन में भी आपको ऐसा ही होना चाहिए। राजनैतिक, आर्थिक तथा जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी आपको नेतृत्व करना होगा और अत्यन्त सहज होना होगा।

किस प्रकार आप सहज (Spontaneous) हो सकते हैं। मेरे अन्दर क्या गुण है? मेरे पास कौन से शस्त्र है? आपको समझना होगा कि क्या निर्णय लूँ? क्या आप जानते है कि आपमें चैतन्य लहरियाँ है और आपको इनका एहसास है? आपका

जानते हैं कि चैतन्य लहरियाँ क्या है? आप ये भी जानते है कि चैतन्य लहरियाँ आपको क्या बता रही है और क्या सूचना दे रही हैं। चैतन्य लहरियाँ आपसे बाते करती है। चैतन्य लहरियों के माध्यम से आपको पलभर में जान लेना चाहिए कि आपको क्या करना है। किसी ने मुझे बताया श्री माताजी जब मैं कबैला आता हूँ तो मुझे बहुत अधिक चैतन्य आता है। ये वास्तविकता है। परन्तु आपमें से कितने लोगों को ऐसा महसूस होता है। कारण यह है कि अभी तक आपकी संवेदनशीलता विकसित नहीं हुई। अपनी चैतन्य लहरियों के विषय में आपको संवेदनशील होना है। किसी पर भी दृष्टि डालकर, किसी के भी समीप बैठते ही आपको पता चल जाना चाहिए। किसी से हाथ मिलाते हुए आपको पता चल जाना चाहिए कि उस व्यक्ति की चैतन्य लहरियाँ कैसी हैं? इस प्रकार की संवेदनशीलता आप स्वयं में विकसित कर लें तो निश्चित रूप से आप सहज (Spontaneous) निर्णय लेंगे। आप जानते हैं मैं ऐसा करने में बहुत पारगंत हूँ। यह कबैला मैने पाँच मिनट में खरीदा था। केवल पाँच मिनट में। जब मैं यहाँ आई तो वे कहने लगे कि आप ऊपर नहीं जा सकतीं क्योंकि आपके पास बड़ी कार है। मेयर ने कहा आप आइये, मैं आपको अपनी कार में ले जाऊंगा। मैं उनके साथ कार में गई और जाकर पाया कि पूरी इमारत बहुत ही जीर्ण–शीर्ण स्थिति में थी। पूरी इमारत की दुर्दशा थी और यह भूतही महल सी लगती थी। इसमें कोई सन्देह नहीं है। जो भी लोग मेरे साथ गए थे सभी कहने लगे, 'ऐसा स्थान! श्रीमाता जी आप इसे नहीं खरीद सकते।

मैने मेयर को बताया कि मैं इसे खरीद रही हूँ, कब? आज, अभी। वह हैरान था। मैने उससे पूछा कि मुझे बताऐं कि किस प्रकार मैं इसे खरीद सकती हूँ। उसने बताया कि इटली में यह कार्य बहुत आसान है। एक तिहाई कीमत देकर खरीद लीजिए। इमारत पर कब्जा कीजिए। इमारत में आपको यदि कोई बुराई नजर आए तो आप इसे छोड़ सकती हैं, परन्तु आपको, दिया हुआ पैसा छोड़ना पड़ेगा। विक्रेता यदि सौदे से इन्कार करता है तो उसे दुगुना पैसा देना पड़ेगा। मैंने कहा बहुत अच्छा सौदा है। मैं ये मकान खरीद रही हूँ। मैने आपको बताया कि मैं इसे खरीद रही हूँ, मैं ये मकान खरीद रही हूँ। सभी लोग हैरान थे कि श्री माताजी क्या कर रहे है? तो किसने निर्णय किया? चैतन्य लहरियों ने। स्थान की चैतन्य लहरियों ने। निर्णय हुआ और मैने कहा मैं इसे खरीद रही हूँ। इससे पूर्व मुझे सात किले दिखाए गए थे लेकिन मैंने कहा, 'नहीं'। बाहर से ही मैने उनको खरीदने से इन्कार कर दिया। लोग हैरान थे कि मैं किले के अन्दर तक नहीं गई। मैने उनसे कहा कि इनसे पूछो कि इसमें क्या था? बताया गया कि यहाँ मठ

(Nunnery) था। मैने कहा देखो। अब आपमें भी इसी प्रकार से सहजता पूर्वक निर्णय लेने की शक्ति विकसित होनी चाहिए। तब आप हैरान होंगे, इतने थोड़े में आप कितनी बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर सकते हैं। इसका अभिप्राय ये नहीं है कि आप सभी ऐसा ही करने लगें। **सर्वप्रथम आपको चैतन्य लहरियों की वह संवेदनशीलता प्राप्त करनी होगी। वह संवेदनशीलता जब आपमें आ जाएगी तब मैं कहूँगी कि आप सहजयोग में परिपक्व हो गए हैं। अतः परिपक्वता लाई जानी चाहिए। आप ये नहीं कह सकते कि 'अब ठीक है मुझे आत्मसाक्षात्कार मिल गया है। मैं ऐसा कर सकता हूँ। पहले आपको अपनी संवेदनशीलता का वज़न आँकना होगा।** ये आप किस प्रकार जान पाएगें? उदाहरण के रूप में यह देखने के लिए कि आपका कुछ नहीं है सब मिथ्या है, आप सहज निर्णय लें। ये सम्भव है परन्तु आप स्वयं देख सकते हैं कि आपके निर्णय सहज होते हुए भी यदि असफल होते हैं, यदि वे गलत हैं, उनमें यदि कुछ गलतियाँ हैं तो वे आपके लिए कष्ट कर होंगे, चाहे आर्थिक रूप से हों या राजनैतिक रूप से या किसी अन्य प्रकार से और तभी आपकी सारी मूल्य प्रणाली भली–भांति परखी जाएगी। कहाँ तक आप सहजयोग में उतरे हैं? कहां तक आपने आत्म–साक्षात्कार पाया है और आपकी स्थिति क्या है? स्वयं को परखने का यही तरीका है। असफलताओं से घबराएं नहीं और न ही सफलताओं से मदमस्त हो जाए क्योंकि अब आप आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति हैं। आप यदि संवेदनशील हैं तो, निःसन्देह तुरन्त जान जाएंगे कि वास्तविकता क्या है? मैं ये नहीं कहूँगी कि आप भी वैसा ही करें जैसा मैं करती हूँ, परन्तु करने का प्रयत्न अवश्य करें।

मैंने देखा है कि कुछ लोग किसी व्यक्ति की बहुत अधिक प्रशंसा करते हैं और कहते हैं कि वह बहुत अच्छा है, आप उससे अवश्य मिलें। ऐसा होगा वैसा होगा। मैने कहा ठीक है आप मुझे उसका फोटो दिखाएं। फोटो देखकर मैने कहा मुझे खेद है मैं उससे नहीं मिल सकती। उनकी समझ में मेरी ये बात नहीं आती। इतना महान व्यक्ति है, कल मंत्री बनेगा। मैं उससे नहीं मिलना चाहती। अगले ही दिन समाचार पत्रों में उसके विषय में एक बहुत बड़ी रिपोर्ट छपी होती हैं कि वह बुरा व्यक्ति है। अतः सहज ढंग से जो आपने निर्णय किए हैं उसकी सूझ–बूझ तथा अपने अनुभवों का मुकाबला करें। परन्तु मैं कहूँगी कि सहज निर्णयों पर डटे रहें। इसके विषय में सोचें मत कि किस प्रकार ये कार्यान्वित होगा और हमें क्या करना चाहिए?

आपके मस्तिष्क पर इसका बहुत गहन प्रभाव पड़ता है क्योंकि आप ये जानते हैं कि

गलत क्या है और ठीक क्या है। मैं नहीं जानती कि आपमें से कितने लोगों ने मेरा बनाया हुआ घर देखा है?

श्री कृष्ण का एक अन्य गुण ये था कि वे अत्यन्त सृजनात्मक थे। अपने बचपन में ही उन्होंने ये सब कार्य किए, सारी शरारते कीं और बड़े होकर द्वारिका क्षेत्र के सम्राट बने। तब वे राजाओं जैसे वस्त्राभूषण धारण करते थे। आखिरकार वे सम्राट थे। शैशवकाल में वे मोर पंख धारण किया करते थे परन्तु राजा बनने के पश्चात् मुकुट धारण करके सिंहासन पर बैठकर राजाओं की शान से लोगों से बात करते थे। उनमें ये सारी महानता थी और वे अत्यन्त सृजनात्मक भी थे। द्वारका में उन्होंने सोने का एक बहुत सुन्दर किला, या कह सकते है महल बनाया। इस बात पर क्या आप विश्वास कर सकते हैं? श्री कृष्ण ने ये कार्य किया, परन्तु बाद में वह सब जल में डूब गया। अब भारत के बुद्धिवादी लोग, जिन्हें पश्चिम से प्रशिक्षण प्राप्त हुआ है, सोचते हैं कि यह सम्भव नहीं हैं। वो कहते हैं कि जल में कुछ नहीं है और न ही श्री कृष्ण ने वहाँ कोई महल बनाया। यह सब मात्र एक कहानी है– एक मनगढ़ंत कथा। परन्तु कुछ लोगों को इस बात पर विश्वास था, उन्होंने समुद्र के जल में खोज करवाई और वहाँ एक बहुत बड़ा महल खोज निकाला। उसमें थोड़ा बहुत सोना भी शेष था। ये लोग आश्चर्य चकित थे कि किस प्रकार उन्होंने इतना बड़ा महल बनाया। वह महल जल के नीचे चला गया था, फिर भी ये वहाँ विद्यमान था। इसी प्रकार जो भी अवतरण अवतरित हुए वे अत्यन्त सृजनात्मक थे। **व्यक्ति में यदि सृजनात्मकता नहीं है तो आत्मसाक्षात्कार का क्या लाभ है? महानतम सृजनात्मक कार्य जो व्यक्ति आसानी से कर सकता हैं वह है सहजयोगी बनाना।** सुगमतम और आनन्ददायी कार्य अन्य लोगों को सहजयोगी बनाना और उन्हें वह दैवी आशीर्वाद देना है, जिसे वे जन्म–जन्मातरों से खोज रहे थे। उन्हें ये आशीर्वाद देकर आप नहीं जानते कि आपको कितने आशीर्वाद प्राप्त होते हैं! तो अब आपको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो चुका है और मैं कहूँगी कि अत्यन्त आसानी से आपको ये प्राप्त हो गया है। सभी लोग कहते हैं कि यह तत्क्षण निर्वाण है।

'सहजयोग' तत्क्षण निर्वाण है, ये बात सत्य है। परन्तु जो चीज़ आपको आसानी से और तत्क्षण प्राप्त हो जाती है आप उसका मूल्य नहीं समझ पाते। आप लोग कहते हैं कि भारत को आसानी से स्वतन्त्रता प्राप्त हो गई। स्वतन्त्रता इतनी आसानी से प्राप्त नहीं हो गई कि वे उसका मूल्य न समझें। परन्तु ये बात भी सत्य है कि कोई चीज़ यदि मुफ्त या बिना किसी प्रयत्न के प्राप्त हो जाए तो व्यक्ति उसका मूल्य नहीं समझता।

आप सोचते हैं कि यह मेरा अधिकार है। क्या आप जानते हैं कि आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए लोगों ने कितने कष्ट झेले? हिमालय में जाकर लोग एक टाँग पर या सिर के भार खड़े होकर तपस्या करते थे, फिर भी उन्हें आत्म–साक्षात्कार नहीं मिलता था। मैंने कुछ लोगों के विषय में सुना है जो आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए अट्ठाइस वर्षों तक एक ही कमरे में बन्द रहे। ऐसा उन्होंने क्यों किया? क्योंकि उन्होंने सोचा कि अन्य लोगों तथा गन्दे वातावरण से दूर रहकर शायद उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाए। परन्तु उन्हें आत्म साक्षात्कार प्राप्त नहीं हुआ। अतः व्यक्ति को समझना चाहिए कि चाहे मुझे आसानी से आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो गया है फिर भी यह अत्यन्त महान और बहुमूल्यतम उपलब्धि है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना बहुत सुगम नहीं है। आत्मसाक्षात्कारी लोगों के विषय में आप पढ़ते हैं। शायद वे तो जानते भी न थे कि किस प्रकार उन्हें ये प्राप्त हो गया। वे तो कुण्डलिनी के विषय में भी न जानते थे फिर भी उन्हें आत्म साक्षात्कार मिल गया। अपने गुरु के माध्यम से या सम्भवतः अपनी तपस्या के कारण। बुद्ध को ही लें, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के लिए उन्हें कितना कष्ट उठाना पड़ा? इसके बारे में सोचें। कैसे उन्हें आत्म साक्षात्कार प्राप्त हुआ? उनके जीवन के कष्टों को देखकर आप काँप उठेंगे। अन्ततः दारिद्रय और भूख के कारण उनकी मृत्यु हो गई। आपको तो कुछ भी नहीं हुआ। बिना किसी कठिनाई के अत्यन्त प्रेमपूर्वक आप सबको आत्मसाक्षात्कार मिल गया। आपको कुछ भी नहीं करना पड़ा, उसके लिए कोई पैसा भी नहीं देना पड़ा। परन्तु इसका अभिप्राय ये नहीं है कि आप इसका मूल्य ही न समझें। बीज को यदि पृथ्वी माँ में डाल दिया जाए तो यह स्वतः अंकुरित हो जाता है और अंकुरण को जीवन प्रदान करता है और यह पहले पौधे और फिर पेड़ का रूप धारण करता है। परन्तु आपको इसको सींचना होगा और माली की तरह से इसकी देखभाल करनी होगी। जहाँ तक आपका अपना सम्बन्ध है आपको स्वयं ये सब कार्य करना होगा।

सर्व प्रथम आपको इसमें करुणा एवं प्रेम की खुराक डालनी होगी। क्या आपके अन्दर करुणा एवं प्रेम है? क्या आप लोगों से प्रेम करते हैं? आज ही किसी ने मुझे बताया और मुझे सदमा लगा, "कि मुझे बच्चे पसन्द नहीं है।" मैने पूछा, "आपको बच्चे अच्छे नहीं लगते?" 'नहीं, मुझे अन्य लोगों के बच्चे पसन्द हैं अपने नहीं'। इसकी कल्पना कीजिए! आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? ऐसी बात आप कैसे कह सकतें हैं? आपको अपने ही बच्चे अच्छे नहीं लगते! सर्वप्रथम आप सबको मैं ये कहूँगी कि कभी भी ये नहीं कहना चाहिए कि मुझे पसन्द है या मुझे पसन्द नहीं है। ये उल्टे मंत्र हैं। ये आम बात है कि 'मुझे ये पसन्द है'। आप कौन हैं? मुझे ये कालीन

पसन्द है या मुझे ये कालीन पसन्द नहीं है। मुझे ये चाँदी की चीज़ अच्छी नहीं लगती । आप कौन होते हैं? क्या आप कोई ऐसी चीज बना सकते हैं? इस प्रकार कोई निर्णय लेना भी ये दर्शाता है कि लोग सोचते हैं ऐसा करना भी अत्यन्त सहज है। ये सहज नहीं है। अपने बन्धनों (पूर्व–संस्कारों) के कारण आप सोचते है कि आपको ये कहने का अधिकार है कि मुझे पसन्द नहीं है, मैं नहीं चाहता। परन्तु आप कौन होते है? आप यदि आत्मा हैं तो आप कभी भी ऐसे शब्द उपयोग नहीं करेगें, क्योंकि इनसे किसी को भी चोट पहुँच सकती है।

कभी भी आप ऐसी कोई बात नहीं करेंगे जिससे दूसरे लोगों को चोट पहुँचे, कभी भी आप ऐसा कोई कार्य नहीं करेंगे जो दूसरों के लिए भयानक हों। सदैव अत्यन्त प्रेममय, करुणा और शान्ति प्रदान करने वाली बाते कहें। अन्य लोगों के प्रति आपको आनन्द प्रसार करना है। आत्मा की शक्ति अन्य लोगों को आनन्द प्रदान करती है। **आप यदि उदासीन हैं तो आप आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं।**

आपको आनन्द प्रेम एवं करुणा प्रदान करने के योग्य होना चाहिए और ये सब सहज रूप से घटित होना चाहिए। भारत के महाराष्ट्र प्रदेश के एक संत की कहानी है। वहाँ के सभी लोग काँवड़ में जल भरकर गुजरात स्थित श्रीकृष्ण मन्दिर में चढ़ाने के लिए ले जाया करते थे। इस कार्य को श्री कृष्ण के प्रति महान समर्पण माना जाता था। ये संत भी जल की काँवड़ उठाकर महाराष्ट्र में स्थित अपने गाँव से चला। जब वह श्री कृष्ण मन्दिर की तलहटी तक पहुँचा तो उसने देखा कि एक गधा प्यास से मर रहा है। अपनी काँवड़ का जल उन्होंने गधे को पिला दिया। सभी लोग कहने लगे कि इतनी दूर से, कितने ही मील चलकर, देवता पर चढ़ाने के लिए जो जल आप लाए थे उसे आपने गधे को पिला दिया! संत ने कहा, "क्या आप नहीं जानते कि परमात्मा इस जल को लेने के लिए नीचे उतर आए हैं?" उनका दृष्टिकोण देखें। अतः आत्मसाक्षात्कारी की करुणा इस प्रकार की होनी चाहिए। अत्यन्त उदारता से परिपूर्ण।**आप यदि उदार नहीं हैं, कंजूस हैं, सदैव अपने पैसे की बचत के विषय में चिन्तित रहते' हैं तो आप परिपक्व सहजयोगी नहीं है।** अभी आप परिपक्व नहीं हैं। इसके अतिरिक्त ऐसा धन आपको प्रसन्नता भी नहीं प्रदान करेगा। कंजूसी आत्मा के विरूद्ध है। आत्मा अत्यन्त उदार है–अत्यन्त उदार। यह कभी कुछ बचाने का प्रयत्न नहीं करती, किसी को धोखा देने का प्रयत्न नहीं करती, कुछ चुराने का प्रयत्न नहीं करती। इन सब बातों का प्रश्न ही नहीं होता क्योंकि ऐसे व्यक्ति में लोभ बाकी नहीं रहता। उसमें लोभ का नामों–निशान नहीं रहता और यही कारण है कि आत्मसाक्षात्कारी व्यक्ति कभी दोषी नहीं

होता। उसे अत्यन्त उदार होना पड़ता है। मैंने ऐसे बहुत से लोग देखे हैं जो अत्यन्त उदार हैं और दूसरों की समस्याओं की जिन्हें बहुत समझ है। **कोई सहजयोगी यदि अपनी ही समस्याओं से घिरा हुआ है तो वह बिल्कुल भी सहजयोगी नहीं है। आप अन्य लोगों की समस्याओं का समाधान करने के लिए हैं केवल अपनी समस्याओं का नहीं और न ही ये कहते फिरने के लिए कि मेरी ये समस्या है।** समस्या (Problem) शब्द आधुनिक युग की देन है। इससे पूर्व हमने कभी ये शब्द उपयोग नहीं किया था। ज्योमिति में हम Problem शब्द का उपयोग करते थे। परन्तु अब इसका उपयोग शुरु हो गया है। लोग कहते हैं कोई समस्या नहीं है। (There is no problem)। सभी समस्या में फँसे हुए हैं। मेरे विचार में वे स्वयं समस्याएं हैं।

अतः आपको समझना है कि अपनी समस्याएं दूसरे लोगों को नहीं देनी चाहिएं। किसी से कुछ माँगना नहीं चाहिए। कृपा करके मेरा ये कार्य कर दें, मेरा वो कार्य कर दें। आश्चर्य की बात है कि लोग दूसरों का लाभ उठाते हैं। कुछ लोग किसी देश की यात्रा करना चाहते हैं तो वो कहेंगे कि आप मुझे बुला लीजिए मैं आपके देश में आना चाहता हूँ और कोई भी उदार सहजयोगी कह देता है, ठीक है आ जाओ। ऐसी स्थिति में माँगने वाले व्यक्ति का पतन हो गया। किसी भी हालात में आपको कुछ नहीं माँगना चाहिए क्योंकि अब आप पूर्ण हैं। केवल सन्तुष्ट नहीं हैं पूर्ण हैं। कोई आपको क्या दे सकता है? **जब आप पूर्णता की स्थिति में होते हैं तो सारी इच्छाएं लुप्त हो जाती हैं।** जैसे आज जब मैं आ रही थी तो मैने देखा बहुत से सितारे निकल आए हैं। मैने कहा, ज्यों ही चन्द्रमा उदय होगा ये सब लुप्त हो जाएगें। इसी प्रकार **जब आप पूर्ण होते हैं तो आप किसी से आशा नहीं करते कि आपके लिए कुछ करे। इसके विपरीत आप ये देखना चाहते है कि आप अन्य लोगों के लिए क्या कर सकते हैं। आप इस प्रकार परिवर्तित होते हैं कि अन्य लोगों की समस्याओं को भी अपने पर ले लेते हैं, उनकी समस्याओं में कूद पड़ते हैं।**

ये अत्यन्त रोचक विकास है जो आपमें घटित होना चाहिए। यह आप सबमें घटित होना चाहिए क्योंकि आपने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लिया है। आपमें ऐसा व्यक्तित्व विकसित हो जाता है जो केवल अन्य लोगों के लिए जीवित रहता है अपने लिए नहीं। आप हैरान होंगे कि आप कहीं भी रह सकते हैं, कहीं भी सो सकते हैं। आप चाहें तो खाना खा सकते हैं न चाहें तो इसकी कोई आवश्यकता नहीं रहती। जैसा भी भोजन आपको मिलेगा आप उसका आनन्द लेंगे। क्योंकि अब आप अन्दर से संतुष्ट हैं। अब

तो आपको दूसरे लोगों के लिए खाना बनाना अच्छा लगेगा। उन्हें भोजन दें। जहाँ तक हो सके अन्य लोगों के लिए कार्य करें। **परन्तु कुछ लोगों की अपनी ही समस्याएं हैं। वे सहजयोगी नहीं है। आत्मा को किस प्रकार समस्याएं हो सकती हैं? किस प्रकार आत्म–साक्षात्कारी व्यक्ति को समस्याएं हो सकती हैं। अतः इस बात को समझें कि अब आप आत्मा हैं और सभी चीज़ों से ऊपर हैं। आपकी सृजनात्मकता भी अब नए आयाम प्राप्त करती है।**

अब आप अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार देने लगते हैं, कला का सृजन करते हैं। आप बाबा मामा को जानते हैं। साहित्य का उन्हें कोई खास ज्ञान न था और न ही उन्हें भाषा का ज्ञान था। वो तो गणित में पारंगत थे क्योंकि मेरे माताजी भी गणितज्ञ थे। तो बाबामामा को भाषा का कोई विशेष ज्ञान न था। भाषा में उनकी इतनी बुरी हालत थी कि स्कूल के उनके प्रस्ताव मैं लिखा करती थी। परन्तु आत्म–साक्षात्कार के पश्चात् उन्होंने इतनी सुन्दर कविताएं लिखीं कि विश्वास ही नहीं होता! कोई सोच भी नही सकता कि ये बाबा मामा ऐसा लिख सकते है, क्योंकि भाषा का तो उन्हें ज्ञान ही न था। जैसा मैंने आपको पहले बताया उनके लिए प्रस्ताव मैं लिखा करती थी। आश्चर्य की बात है, उन्होंने उर्दू, हिन्दी और मराठी में कविताएं लिखनी शुरू कर दीं। मेरे एक अन्य भाई ने बाबा मामा से पूछा कि तुम्हें ये उर्दू कविताएं कैसे सूझतीं हैं? उन्होंने उत्तर दिया, "सभी कुछ मुझे श्रीमाताजी बताती हैं।" वे यही कहा करते थे, "माताजी मुझे सब कुछ बताती हैं।"

आपके अन्दर की सृजनात्मकता खिल उठती है और आप स्वयं पर ही आश्चर्य करते हैं कि किस प्रकार यह सृजनात्मकता मुझमें जाग उठी! किसी गणितज्ञ के कवि बन जाने की कल्पना करें। यह असम्भव स्थिति है परन्तु आपमें ये क्षेम है। आप सबमें ये योग्यता है कि आप सृजनात्मक बन सकते हैं। सभी प्रकार से आपने सृजनात्मक बनना है। मैं कहना चाहूँगी कि मैं भी बहुत सृजनात्मक हूँ। हर समय मैं कुछ न कुछ कार्यान्वित करती रहती हूँ और मेरा कार्य बखूबी होता है। सामान्य लोगों की तरह से मुझे इस बात की भी आकांक्षा नहीं होती कि मेरे कार्यों की प्रशंसा की जाए या ये समाचार पत्रों की सुर्खियों में हों। इसमें मेरी कोई दिलचस्पी नहीं। सृजन के लिए सृजन करें। आप भी सृजन के लिए सृजन करें। सृजनात्मकता का आनन्द लें और जो भी कुछ लोग कहते हैं या करते हैं उसे सहज रूप से लें। हो सकता है लोग आपके प्रति आक्रामक हों या आपकी प्रशंसा कर रहे हों। लेकिन इन चीज़ों का आप पर कोई प्रभाव नहीं होना चाहिए। कई बार आप जब कहते हैं 'श्री माताजी की जय' तो आपके साथ–साथ मैं भी कहती हूँ। मैं भूल जाती हूँ कि आप

लोग मेरी जयकार कर रहे हैं। जो भी हो आपको इन सब चीज़ों से ऊपर उठ जाना चाहिए।

परन्तु लोगों का व्यवहार समझ में नही आता। उनका व्यवहार ऐसा क्यों है? सहजयोग में आकर भी उनमें अगुआ बनने की, सहजयोग के आयोजक बनने की तीव्र इच्छा होती हैं। वो चाहते हैं कि सहजयोग में सभी लोग उन्हें जानें। महान सहजयोगी के रूप में वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति पाना चाहते है, परन्तु ये कभी नहीं सोचते कि मैंने क्या सृजनात्मकता दर्शाई है, क्या सृजन किया है? मानव में ये आम बात है, वो चाहते हैं कि अन्य लोग उनकी प्रशंसा करें और उनका बडा नाम हो। किस कारण से? आप यदि आत्मा हैं तो, सभी जानते हैं, दिखावे के लिए, प्रदर्शन के लिए क्या है, आगे आने के लिए क्या है? आप चाहे सबसे पीछे हों फिर भी आप जानते हैं कि प्रकाश है।**अतः आपको अपने अन्धेरों में से निकलना होगा क्योंकि आप प्रकाश हैं और प्रकाश फैलाते हैं। इसकी अपेक्षा आप स्वयं यदि अंधेरे में हैं तो क्या प्रकाश फैलाएंगे?**

अतः आपकी आत्मा को समस्याएं नहीं हो सकतीं। इसे कोई भय नहीं है। सर्वोपरि इसमें विवेक है, गहन विवेक और आपके अत्यन्त उच्च व्यक्तित्व का यही चिन्ह है। जैसा मैंने बताया यह उत्क्रान्ति है और जब आप परिवर्तित हो जाते है तो उत्क्रान्ति की उच्च अवस्था में पहुँच जाते हैं। जब आप परिवर्तित होते हैं तो उत्क्रान्ति की उच्च अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं। आपका स्वभाव बिल्कुल बदल जाता है और आप उठ खड़े होते हैं। सहजयोगी भी यदि अन्य लोगों की तरह से हों तो सहजयोग अपनाने का क्या लाभ है? ईसा मसीह कौन थे? वे एक बढ़ई के पुत्र थे। उन्हें बिल्कुल भी शिक्षा प्राप्त न हुई। परन्तु उन्होंने क्या कर दिखाया? वे आत्मा थे। उन्होंने अपने अन्दर के परमात्मा को प्रतिबिम्बित किया और क्रूसारोपित हो गए। सहजयोग में आपको क्रूस पर नहीं चढ़ना पड़ता।

यहाँ आपके लिए ऐसी कठिन परिक्षाऐं नहीं हैं परन्तु आपकी मूल्य प्रणाली की परीक्षा होती है। अन्तर्दर्शन द्वारा इस बात का पता लगाएं कि आप किस प्रकार कार्य कर रहे हैं। स्वयं से पूछें कि "श्रीमान सहजयोगी, आप कैसे हैं?" क्या अब भी आप उन सारी चीज़ों में लिप्त हैं जिनमें वो लोग लगे हुए हैं जो आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं? खोजने का प्रयत्न करें क्योंकि सहजयोग की उन्नति आपके आचरण से, आपकी शैली से और आपके चेहरे पर दिखाई देती है। ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर झुर्रियां भी नहीं होती उसे कोई चिन्ता नहीं होती और चिन्ता यदि न हो तो झुर्रियां नहीं पड़तीं।

ऐसा व्यक्ति किसी से परेशान नहीं होता। इसके विपरीत वह घटनाओं पर हँसता है। स्विज़रलैण्ड के एक चर्च में एक बार एक महिला बाइबल से मुझे मारने के लिए आई। मैं हँसने लगी कि मैं भी क्या चीज़ हूँ जिसे बाइबल ग्रन्थ द्वारा चोटें पहुँचाई जाने वाली हैं। उस महिला ने जब मुझे हँसते हुए देखा तो वह घबरा गई। मैं कह रही थी कि इसकी मूर्खता को देखो, ये मुझे बाइबल से मारना चाहती है। चोट मारने के लिए पत्थर आदि कोई अन्य चीज़ तो समझ आती है परन्तु बाइबल तो मुझे कभी भी चोट नहीं पहुँचाएगी। ये सारी घटनाएं आपके सम्मुख हुई हैं और इनके विषय में आप जानते हैं। **नकारात्मक शक्तियाँ आपको हानि पहुँचाना चाहती हैं। वो आपको बुरी तरह से हानि पहुँचाएगी। मानसिक रूप से वो आपको हानि पहुँचाएगी और हो सकता है भावनात्मक रूप से भी हानि पहुँचाएं। परन्तु जब आप इनसे ऊपर उठ जाते हैं तो कोई आपको हानि नहीं पहुँचा सकता, कम से कम हानि का प्रभाव आप पर नहीं होता।** इस हानि की चिन्ता आप नहीं करते। परन्तु आपने क्या सृजन किया है? आज मेरे पास कुछ महिलाएं और पुरुष आए। वे सब तलाक के लिए आए थे। सहजयोग में विवाह करने के पश्चात् वे तलाक के लिए आए थे। क्या आप इसकी कल्पना कर सकते हैं? मुझे बहुत सदमा पहुँचा। उनके विचार बड़े अजीबोगरीब थे कि मेरे पति मेरे भाई की तरह से हैं। मैंने कहा, वास्तव में। उनके मस्तिष्क सभी प्रकार के मूर्खता पूर्ण विचारों से भरे हुए थे। कहने से अभिप्राया ये है कि उनके अन्दर आत्मा के प्रकाश का पूर्ण अभाव था। **आत्मा का प्रकाश जब आपमें होता है तो आपकी समझ भी बिल्कुल भिन्न होती है। अपनी चिन्ता आपको नहीं होती। आप दूसरों के लिए चिन्तित होते हैं और उन्हीं की समस्याओं का समाधान खोजने में लगे रहते हैं। उनकी सहायता करने का प्रयत्न करते हैं। ऐसा करना, आपके लिए बहुत आसान है।** दीपक के लिए सबसे सहजकार्य क्या है? जलना। एक बार जब यह प्रकाशित हो जाता है तो यह जलता रहता है। प्रकाश–हीन होना इसके लिए कठिन होता है। परन्तु मानव में, मैं नहीं समझ पाती, आत्मसाक्षात्कार और इतने वर्षों तक उन्नत होने के बाद भी इतनी मूर्खताएं भरी रहती हैं कि वे अपने आत्मसाक्षात्कार की महत्ता को महसूस नहीं कर पाते! यह आत्मा है आप इसे मार नहीं सकते। ये बुझ नहीं सकती। साधारण दीपक बुझ सकता है परन्तु आत्मा रूपी दीपक कभी नहीं बुझ सकता। इस दीपक में कौन सा तेल जलता है? आपकी करुणा, प्रेम तथा अन्य लोगों के प्रति सेवाभाव ही इसका तेल है। मैं जानती हूँ कि कुछ लोग अत्यन्त रौबीले और कष्टदायी होते हैं, परन्तु उनका भी ध्यान रखें। समझ लें कि वे आप जैसे नहीं है, वे पूर्ण नहीं हैं उनमें समस्याएं हैं।

अतः उनकी देखभाल करें। उनकी देखभाल करने के स्थान पर यदि आप सोचने लगते हैं कि मैं क्यों उसकी चिन्ता करूं, ये मेरे लिए क्या करता हैं, तो हो गया आपका पतन। इस प्रकार की अभिव्यक्ति या, कह सकते हैं, इस प्रकार की प्रतिक्रिया आत्मा की नहीं हो सकती। आध्यात्मिक व्यक्ति की प्रतिक्रियाएं बिल्कुल भिन्न होती हैं।

श्री कृष्ण के जीवन को देखें उनके एक मित्र अत्यन्त दरिद्र थे। वे श्रीकृष्ण से मिलने आए। उनकी पत्नी ने भेंट के रूप में भुने हुए चावल भेजे क्योंकि प्रथा है कि किसी मित्र से मिलने जाऐं तो कुछ लेकर अवश्य जाऐं। उन्हें काफी संकोच हो रहा था। जब वे पहुँचे तो श्रीकृष्ण अपने महल में थे और द्वारपालों ने उन्हें महल में जाने की आज्ञा न दी। उन्होंने द्वारपालों से कहा आप जाकर श्री कृष्ण को केवल इतना बता दें कि सुदामा आया है। श्री कृष्ण अपने सिंहासन पर बैठकर कुछ विचार– विमर्श कर रहे थे। उन्होंने सुना तो कह उठे सुदामा आए हैं? सिंहासन छोड़कर वे दौड़ पड़े और द्वार पर पहुँचकर बार–बार सुदामा को गले से लगाया। उनसे पूछा, "तुम यहाँ क्यों खड़े हो? सुदामा को ले जाकर उन्होंने अपने सिंहासन पर बैठाया और अपनी पत्नी से कहा कि इनके चरण धोओ।" तब उन्होंने उनके लिए वस्त्र मंगवाए और स्नान करवाया। अपने बिस्तर पर उन्हें सुलाया। श्री कृष्ण के प्रेम को देखें! सुदामा के पैर अत्यन्त गन्दे और फटे हुए थे। उन्होंने उनके फटे हुए पैरों पर बाम लगाई। फटे हुए पैरों को आराम पहुँचाने के लिए उन्होंने यथासम्भव प्रयत्न किए और अपने बिस्तर पर उन्हें सुलाया। महिलाओं को उन्हें पंखा झलने के लिए कहा ताकि वे चैन से सो सकें। श्रीकृष्ण की करुणाा को देखें, ये कितनी सुन्दर थी! क्या हम भी उतने करुण हैं? यह सब करने की श्रीकृष्ण को कोई आवश्यकता न थी। यह कोई नाटक न था। उनके हृदय का सहज निर्णय था। सुदामा के आने की खबर मिलते ही वे नंगे पाँव दौड़ पड़े। पुराने मित्र के आने पर वे अत्यन्त प्रसन्न हुए।

बाद में जब वे हस्तिनापुर गए तो कौरव के बड़े पुत्र दुर्योधन ने उनसे कहा कि आप आइए और मेरे महल में ठहरिए। तो श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया ठीक है मैं तुम्हारे पास ठहरूंगा परन्तु भोजन मैं विदुर के साथ करुंगा। विदुर एक दासी के पुत्र थे। श्रीकृष्ण ने उनके यहाँ भोजन किया। गरीब विदुर ने न जाने उनको क्या भोजन कराया होगा? दुर्योधन तो उन्हें राजसिक भोजन खिलाते। तो ऐसे व्यक्तियों के लिए स्वाद और खाने के स्तर का कोई महत्व नहीं रह जाता। आत्मसाक्षात्कारी विदुर को उन्होंने सम्मान दिया। अन्य सहजयोगियों का सम्मान आवश्यक है। कोई सहजयोगी यदि किसी गवर्नर का सम्मान करें तो ये बात समझ नहीं आती। आत्मा इन सब चीज़ों से ऊपर है। सहजयोगी में भी यदि कोई

त्रुटि है तो ये उसका भी सम्मान नहीं करती। हमें समझना चाहिए कि आध्यात्मिक व्यक्ति बड़े–बड़े नामों तथा ख्याति वाले लोगों से कहीं अधिक ऊँचा होता है। सभी आध्यात्मिक व्यक्तियों के जीवन से प्रेम झलकता है। सभी संतों, सभी अवतरणों में प्रेम सर्वोपरि था। बिना किसी आकांक्षा के, किसी इच्छा से नहीं, वे प्रेम करते थे। उनका व्यक्तित्व ही ऐसा होता है, जिससे परमात्मा का प्रेम प्रतिबिम्बित होता है। वही प्रतिबिम्ब आपसे भी झलकना चाहिए। आप सहजयोगी हैं परन्तु इसका अभिप्राय ये नहीं कि आप अन्य लोगों से उच्च हैं। निःसन्देह आप अन्य लोगों से भिन्न हैं, उनसे उन्नत हैं। श्रेष्ठ होने का अहं आपमें नहीं है इसीलिए आप उनसे भिन्न हैं, आप अत्यन्त विनम्र हैं इसीलिए आप भिन्न हैं आप अत्यन्त आन्नदमय हैं, अत्यन्त शांत है इसी कारण अन्य लोगों से भिन्न हैं।

श्रीकृष्ण के जीवन की बहुत सी बातें मैं आपको बता सकती हूँ जो ये दर्शाती हैं कि वे योगेश्वर थे। वे योग के स्वामी थे। वे विराट थे। परन्तु उन्होंने अपना विराट रूप केवल अर्जुन को दिखाया किसी अन्य को नहीं। कोई भी अन्य व्यक्ति अर्जुन सा नहीं था। विराट रूप को देखकर अर्जुन भी घबरा गए। ग्वाले की तरह से श्री कृष्ण गोकुल में रहे और कभी अपनी शक्तियों का प्रदर्शन नहीं किया। उनकी शक्तियाँ अन्तर्निहित थीं और इनकी अभिव्यक्ति सहज रूप से हो रही थी। उनकी शक्ति में विवेक एवं सूझ–बूझ थी। विवेकहीन शक्ति दिव्य शक्ति न होकर आसुरी शक्ति हो सकती है। कोई भी व्यक्ति आपके प्रति तभी शुभ–चिन्तक हो सकता है जब आप उसके शुभ–चिन्तक हों। भारत में बहुत से अवधूत हुए। वे आत्मसाक्षात्कारी थे जिन्होंने अपना समाज लोगों की भीड़–भाड़ को त्यागकर किसी छोटे से स्थान या गुफा में तपस्या का जीवन गुजारा। उन्होंने सोचा कि जब लोग उनकी बात को समझ ही नहीं सकते तो उनकी बात का क्या लाभ है। ऐसे लोग गिने–चुने हैं। कोई एक यहाँ था और दूसरा कहीं ओर। वो क्या कर सकते थे? आप सहजयोगियों की तरह से वो इतनी बड़ी संख्या में न थे। आप सहजयोगियों की तरह से वो इतनी बड़ी संख्या में न थे। आपके साथ बहुत से सहजयोगी मित्र हैं। वे अकेले थे और उन्होंने समाज से स्वयं को छुपाकर रखा। वे लोगों से न मिलते थे क्योंकि उन्हें भय था कि उन्होंने यदि कुछ बताया तो उनकी हत्या कर दी जाएगी। परन्तु आप लोगों के साथ ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि आपका तो सहज समाज है। अत्यन्त शानदार आध्यात्मिक लोगों तथा अच्छे मित्रों का प्रबुद्ध समाज आपके साथ है। ये सब होते हुए भी यदि आप सृजन नहीं कर सकते तो मैं क्या कहूँ? आपको कुछ सृजन करना होगा चाहे वह कला हो, संगीत हो, कविता हो, साहित्य हो, लेख हो या कोई अन्य चीज। आपको सृजन करना होगा।

सृजन की यही मुख्य उपलब्धि आपने पानी होगी। **सर्वत्र सहजयोगी बनाना ही आपका मुख्य कार्य है।** मैं यहाँ हूँ परन्तु अपने उदाहरण से आप लोगों को यह (सहजयोग) दर्शाना होगा कि यह कुछ महान चीज़ है। किस प्रकार बड़े–बड़े तपस्वियों ने ये स्थिति प्राप्त की? आपको भी वह स्थिति प्राप्त करनी है। आप ही सभी को प्रेरित कर सकते हैं कि वे आपका अनुसरण करें और सहजयोग अपना लें। आप यदि पूर्णत्व प्राप्त कर लें तो वास्तव में आप महायोगी हैं। आपको यह अवस्था प्राप्त करनी ही होगी। महायोगी बनने से अधिक महत्वपूर्ण कार्य कुछ भी नहीं है। इस अवस्था में आपकी आत्मा सभी को आनन्द, शान्ति और आशीर्वाद प्रदान करती है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

सहस्रार चक्र

नई दिल्ली 4 फरवरी, 1983

(श्री चक्र एवं ललिता चक्र का वर्णन) (निर्मला योग से उद्धृत)

परम् पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आज मैं आपको अन्तिम चक्र, सहस्रार, के बारे में बताऊंगी। सहस्रार, अन्तिम चक्र, मस्तिष्क के तालू क्षेत्र (Limbic area) के अन्दर होता है। हमारा सिर नारियल जैसा है। नारियल के ऊपर जटाएं होती हैं फिर उसका एक सख्त खोल (Nut) होता है, फिर एक काला खोल और उसके अन्दर सफेद गिरी और उसके अन्दर रिक्त स्थान (Space) और पानी होता है। हमारा मस्तिष्क भी इसी प्रकार बना होता है। यह श्रीशक्ति का फल है। श्री शक्ति दांयीं तरफ की शक्ति है, और बाँयीं तरफ की शक्ति ललिता–शक्ति है। **तो हमारे अन्दर दो चक्र हैं–बाँयें कंधे के जरा नीचे ललिता चक्र और दाहिने कंधे के जरा नीचे श्री चक्र।** ये दो चक्र, दाँयीं तरफ महासरस्वती शक्ति और बाँयीं तरफ महाकाली शक्ति को चलाते हैं। कुण्डलिनी शक्ति दोनों के बीचोंबीच है। उसे उठकर अलग–अलग चक्रों को भेदकर Limic area में प्रवेश करना होता है और वहाँ सातों चक्रों को प्रकाशित करना होता है। तो वह छः चक्रों को भेदकर Limbic area में प्रवेश करती है और मस्तिष्क में स्थित सात पीठों को, जो Limbic area की मध्य रेखा पर रखे गये हैं, प्रकाशित करती है। अगर हम पीछे से शुरू करें तो सबसे पीछे मूलाधार चक्र है, उसके चारों तरफ स्वाधिष्ठान, फिर नाभि, फिर अनहत, फिर विशुद्धि और उसके बाद आज्ञा चक्र होता है। इस तरह यह छः चक्र मिलकर सातवाँ चक्र सहस्त्रार बनता है। यह बहुत ही महत्वपूर्ण बात है जो हमें पता होनी चाहिए। **श्री चक्र दांयीं ओर की कार्य शक्ति है और ललिता चक्र बांयी ओर की कार्य शक्ति है।** अतः जब कुण्डलिनी नहीं जागृत होती, तो हम दांयीं ओर की शक्ति से शारीरिक और मानसिक कार्य करते हैं, इसलिये हमारा मस्तिष्क दांयीं ओर की क्रिया करता है। अतः हमारा मस्तिष्क श्रीफल की तरह है। सहस्रार वास्तव में छः चक्रों का समूह है, और यह एक खाली स्थान है, जिसके दोनों तरफ एक हजार नाड़ियाँ होती हैं और जब प्रकाश Limbic area में आता है, तब इन नाड़ियों का प्रज्जवलन होता हैं, और वे लौ (ज्वाला) के समान दिखाई देती हैं। बहुत ही सौम्य लौ के समान दिखाई

देती हैं और इन सबकी लौ में वो सभी सात रंग होते हैं, जो इन्द्रधनुष में दिखाई देते हैं। परन्तु अन्तिम लौ अन्त में समग्र लौ बन जाती है। यह बिलकुल (crystal clear) स्वच्छ लौ होती है। अतः ये सब सात तरह के प्रकाश अन्त में एक स्वच्छ (crystal clear) प्रकाश बन जाते हैं।

सहस्रार में एक हजार नाड़ियाँ होती हैं जिन्हें एक हजार पंखुड़ियाँ कहते हैं। लेकिन यदि आप मस्तिष्क को आड़ा (transverse) काटें या समतल (horizontal) काटें तो आप देख सकते हैं कि ये सब नाड़ियाँ इस तरह से, पंखुड़ियों की तरह, Limbic area में रखी होती हैं। और अगर आप इस तरह से (vertically) खड़ी काटें, तो आप पायेंगे कि हर एक नाड़ियों के संग्रह में कई नाड़ियाँ हैं। इस प्रकार मस्तिष्क प्रदीप्त होने के पश्चात् सहस्रार लौ के एक जलते हुए गट्ठे (burning bundle) के समान दिखाई देता है। यह बड़ा गहन विषय है।

इस प्रकार कुण्डलिनी द्वारा मस्तिष्क प्रदीप्त कर देने पर सत्य की आपके मस्तिष्क में अनुभूति होती है। इसीलिए यह 'सत्यखण्ड' कहलाता है, यानि आप सत्य को, जो आपके मस्तिष्क द्वारा ग्रहण होता है, देखना शुरु कर देते हैं। क्योंकि इससे पहले जो कुछ भी आप अपने मस्तिष्क द्वारा देखते हैं, सत्य नहीं होता। जो आप देखते हैं सिर्फ बाह्य रूप ही है। यानि आप रंग देख सकते हैं, आप रंगों के अलग–अलग रूप देख सकते हैं, आप वस्तु की उत्तमता (quality) को देख सकते हैं। लेकिन आप यह नहीं बता सकते कि क्या यह कालीन किसी संत ने इस्तेमाल किया हुआ है? आप यह नहीं बता सकते कि यह किसी दैवी व्यक्ति ने बनाया है या किसी दानव ने। आप यह भी नहीं बता सकते कि यह व्यक्ति अच्छा है या बुरा है। आप यह भी नहीं बता सकते कि यह देवता (deity) स्वयंभु हैं या नहीं। आप अपने किसी रिश्तेदार के बारे में यह नहीं बता सकते कि यह अच्छा रिश्तेदार है या बुरा रिश्तेदार, या वह किस प्रकार का व्यक्ति है। वह गलत प्रकार के लोगों के पास जाता है या सही लोगों के पास जाता है, उसके गलत सम्बन्ध हैं या ठीक? यहां 'ठीक' का मतलब दैवी से है। तो आप अपने मस्तिष्क से दैवी (Divine) के बारे में कुछ भी नहीं जानते। कुछ भी नहीं, कुछ भी नहीं जानते। एक मनुष्य की आध्यात्मिकता को परखना आपके लिए असंभव है जब तक कुण्डलिनी Limbic area में न पहुँच जाये। आप यह नहीं मालूम कर सकते कि यह मनुष्य सच्चा है या नहीं। यह गुरु सच्चा है या नहीं। क्योंकि दिव्यत्व (Divinity) की आपके अपने मस्तिष्क में अनुभूति नहीं हो सकती, जब तक कि आपकी आत्मा का प्रकाश इसमें प्रकाशित नहीं होता।

आत्मा हृदय में अभिव्यक्त होती है, हृदय में प्रतिबिम्बित होती है। आत्मा का स्थान हृदय में होता है ऐसा कह सकते हैं। लेकिन वास्तव में आत्मा का स्थान ऊपर, यहाँ है, जो सर्वशक्तिमान भगवान की आत्मा है, जिसे आप 'परवरदिगार' कहते हैं या 'सदाशिव' या आप इसे 'रहीम' कह सकते हैं। आप उसे अनेक नामों से पुकार सकते हैं, जो प्रभु निरंजन के बारे में प्रयोग होते हैं–निरंजन, निरंकार, हरेक प्रकार के शब्द जो "निर", 'निः' से शुरू होते हैं। शरीर में हरेक चक्र पर आप एक अलग प्रकार का आनन्द प्राप्त करते हैं। कुण्डलिनी जागने के बाद हरेक चक्र का एक अलग प्रकार का आनन्द होता है और कुण्डलिनी के ऊपर चढ़ते समय प्रत्येक चक्र पर जो आनन्द प्राप्त होता है उसका अलग–अलग नाम है। **जब कुण्डलिनी सहस्रार में आती है, तब जो आनन्द प्राप्त होता है, उसे 'निरानन्द' कहते हैं**। 'निर' का अर्थ है सिर्फ, आनन्द ही आनन्द, और कुछ भी नहीं। आश्चर्य की बात है कि मेरा नाम भी 'नीरा' है। अपने परिवार में मुझे नीरा पुकारा जाता है। नीरा का मतलब है 'मेरी', 'मरियम', क्योंकि इसका अर्थ है मैरीन (marine), 'नीरा' जल है, संस्कृत भाषा में 'नीर' का अर्थ जल होता है। तो मस्तिष्क में इसे निरानन्द कहते हैं।

अन्त में इस अवस्था का उन्मोचन (शुभारम्भ) होता है। सर्वप्रथम आपको जो अनुभूति प्राप्त होती है वह 'सत्य' होती है। किसी को क्या तकलीफ है, यह आप अपनी उंगलियों पर देखते हैं। तो पहले आप अपने चित्त से उंगलियों पर देखते हैं। आप अपने चित्त से जानते हैं कि कौन–सा चक्र, कौन सी उंगली की 'पकड' है। तब आप अपने मस्तिष्क की सहायता से पहचानते हैं कि कौनसा चक्र खराब है। क्योंकि अगर आप कहें कि इस उंगली की पकड़ है तो इसका मतलब यह नहीं कि यह विशुद्धि चक्र है। लेकिन आपका मस्तिष्क यह बता सकता है कि यह विशुद्धि चक्र है और वह दर्शाता है कि इस व्यक्ति को विशुद्धि चक्र की तकलीफ है। लेकिन यह भी मस्तिष्क की बात (Rationalization) है। क्योंकि आप पहले देखते हैं कि कौनसी उंगली की 'पकड़' है और फिर आप बताते हैं कि कौनसा चक्र खराब है।

लेकिन जब 'सत्यखण्ड' यानि सहस्त्रार और ज्यादा खुल जाता है, तो आपको सोचने की जरूरत नहीं पड़ती; आप तुरन्त कह देते हैं। उस समय आपके चित्त' में और आपके 'सत्य' में कोई अन्तर नहीं रह जाता। प्रकाशमान 'चित्त' और प्रकाशमान 'मस्तिष्क' एकाकार हो जाते हैं। ऐसे व्यक्ति के लिए कोई समस्या नहीं रह जाती और उंगलियों पर देखने की जरूरत नहीं पड़ती है। उंगलियों पर कुछ देखकर और फिर मस्तिष्क से जानने की

कोई जरूरत नहीं रह जाती है। जैसा कि आपने सहजयोग में सीखा है कि अगर इस उंगली में कुछ गडबड़ है, तो इसका मतलब आज्ञा चक्र खराब है, यह आवश्यक नहीं। आप बस कह देते हैं कि आज्ञा चक्र खराब है। आपने जैसा कहा, वास्तव में वैसा ही होता है।

उसके बाद, मस्तिष्क और भी ज्यादा खुलता है। सर्वप्रथम, जैसे मैंने बताया, यह चित्त के साथ एकाकार हो जाता है। फिर, जब यह 'आत्मा' के साथ पूर्णतया एकाकार हो जाता है, तब आप जो कुछ भी कहते हैं वह सत्य ही होता है। आप बस कह देते हैं, और वही वास्तव में होता है। इस प्रकार यह मस्तिष्क तीन नये आयामों को प्रकट करता है। सर्वप्रथम यह तार्किक निष्कर्षों (logical conclusions) द्वारा सत्य को व्यक्त करता है। जैसा मैंने बताया, मेरे अगर इस उंगली की पकड़ है तो इसका मतलब विशुद्धि चक्र खराब है, और फिर आप उस व्यक्ति से पूछते हैं, "क्या आपको यहाँ कुछ तकलीफ हैं?" वह कहता है, "हाँ है।" तब आपका मुझमें विश्वास होता है और आप विश्वास करते हैं कि यह जो विशुद्धि चक्र दिखाई दे रहा है सो सत्य है। यह एक तर्क पर आधारित निष्कर्ष है। क्योंकि आपने प्रयोग किया, आप देख रहे हैं और फिर भी सन्देह कर रहे हैं कि माताजी जो बताती हैं वह सत्य है या नहीं। फिर आप निश्चित हो जाते हैं कि हाँ, यह ऐसा ही है। आपने देखा है कि यह विशुद्धि चक्र ही है। अतः सत्य तर्कानुसार मस्तिष्क को स्वीकार्य हो जाता है। फिर भी मस्तिष्क बाह्य स्तर (gross level) पर ही कार्यशील रहता है।

दूसरी अवस्था में, जेसा मैंने बताया आप विश्वास करते हैं, पक्की तरह से जान जाते हैं कि इसका अर्थ विशुद्धि चक्र है, इसके बारे में कोई शंका नहीं। इस प्रकार 'निर्विकल्प' की अवस्था आरम्भ हो जाती है, जब मेरे और सहजयोग के बारे में कोई शंका नहीं रह जाती। लेकिन उस समय आपके अन्दर मस्तिष्क का और उन्मोचन (खुलना) प्रारम्भ हो जाता है। उसके लिए आपको 'ध्यान' (meditation) करना पड़ता है। नम्रता में (in humility) स्थित होकर आपको ध्यान करना पड़ता है। इस नई अवस्था के लिए जब आपका चित्त स्वयं आपके मस्तिष्क, प्रदीप्त मस्तिष्क, में विलय हो जाता है। इसके लिए व्यक्ति को अत्यन्त सच्चाई और नम्रतापूर्वक सहजयोग के प्रति आत्मसमर्पण करना पड़ता है।

अब जब आप चैतन्यलहरियां (vibrations) प्राप्त कर लेते हैं तब आप क्या करते है? लोगों की अलग–अलग प्रतिक्रिया होती है। कुछ लोग इन लहरियों का मूल्य तक नहीं समझते। कुछ लोग सीखने की कोशिश करते हैं कि इसका क्या अर्थ है और कुछ लोग तुरन्त

सोचने लगते हैं, "अब हम आत्म–साक्षात्कारी हो गए हैं और अन्य लोगों को आत्मसाक्षात्कार दे सकते है।", वे अहंकार की सवारी (egotrip) करने लगते हैं। जब वे अहंकार की सवारी करने लगते हैं, तो वे अपने आपको असफल पाते हैं और उन्हें जहाँ से शुरू किया था वहीं वापस आना पड़ता है। यह सांप और सीढ़ी के खेल की तरह होता है। **तो चैतन्यलहरियों के प्रति बहुत ही विनम्र और ग्राही, आदरपूर्ण (receptive) प्रतिक्रिया होनी चाहिए।**

बाह्य रूप में, जैसा मैंने आपको बताया कि मस्तिष्क में पिता (सदाशिव) का स्थान है। इस लिये अगर आप पिता (सदाशिव) के विरुद्ध कोई पाप करते हैं, तो आगामी नये आयाम खुलने में समय लगता है। **फिर हम पुस्तक पढ़ने लगते हैं और यद्यपि बताया गया है कि पहले पुस्तक की चैतन्य लहरियाँ (vibrations) देखो और फिर उसे पढ़ो। लेकिन आप कहते हैं, 'क्या बुरी बात है, हमें अन्य पुस्तकें भी पढ़नी चाहियें। तो जैसा मैंने बताया आप सांप सीढ़ी के खेल में नीचे गिर जाते हैं। यह भी एक सांप है। सोचते हैं "ध्यान करने की क्या आवश्यकता है? मेरे पास समय नहीं है, मुझे यह करना है, वह करना है।"** परिणाम वश आपकी उन्नति नहीं होती है।

दूसरी बात बड़ी स्थूल है। कुछ बहुत ही स्थूल (gross) व्यक्ति सहजयोग में प्रवेश कर लेते हैं। कोई बात नहीं। लेकिन पहली बात जो आपको जरूर जाननी चाहिए, वह यह है **कि आपको सहजयोग में ईमानदार, बहुत ही ईमानदार, रहना पड़ेगा।** ईमानदारी से मतलब है, मैंने देखा है, जैसे कि कहीं कोई भोज (खाना–पीना) या शादी की पार्टी है तो वे आत्म–सम्मान को तिलाँजलि देकर चुपके से घुस जायेंगे। उन्हें कोई विचार नहीं कि इसके लिए पैसा कौन देगा? वे अपने सारे परिवार को ले आएंगे और बैठ जाएंगे। फिर, ऐसे लोग भी होते हैं जो सहजयोग में जो पैसा देना चाहिए उससे बचते हैं। मान लीजिए कि खाना खा रहे हैं या सफर कर रहे हैं या विदेश से आ रहे हैं, तो उन्हें अपने सफर के लिए और खाने–पीने के लिए पैसा देना चाहिये। आपको पता है बहुत बार मारी पैसा देना पड़ता है। कोई बात नहीं, मैं इसका विचार नहीं करती लेकिन यह आपके लिए ठीक नहीं। मुख्य बात यह है कि यह आपके लिए ठीक नहीं है। तो पैसे के मामले में आपके सहजयोग के प्रति कैसे आचरण हैं, यह भी बहुत महत्वपूर्ण बात है। यद्यपि यह बहुत ही स्थूल सी (gross) प्रतीत होती है,

लेकिन यह आपकी उन्नति में बहुत समस्या उत्पन्न कर सकती है, क्योंकि उससे नाभि चक्र खराब हो जाता है और जैसा कि आप जानते हैं कि अगर नाभि खराब हो गई तो यह खराबी सारे भवसागर (void) पर व्याप्त हो जाती है, और अगर भवसागर खराब हो गया तो एकादश रुद्र की संहार शक्तियाँ जो यहाँ पर हैं, पकड़ी जाती हैं।

तो यहजयोग में आने से पहले यह सब ठीक था। आप सब प्रकार के दुष्कर्म करते थे और आप अनायास नरक में पहुँच जाते थे। नरक में जाना तो बहुत ही आसान है। दो छलांग लगाओ और नरक में पहुँच जाओ। बाकी सब कुछ आप जानें। लेकिन नरक में जाना सबसे आसान काम है। इसके लिए आपको कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती। लेकिन जब आप ऊपर उठ रहे हैं, उन्नति कर रहे हैं, तब थोड़ा कठिनाई है। आपको ध्यान रखना है कि आप लड़खड़ाएं (डगमगाएं) नहीं, गिरें नहीं, और ऊपर उठते रहें।

इसलिये आपको सतर्क रहना है कि आप अपनी पुरानी आदतों में तो नहीं फंस रहे हैं। कुछ लोगों में सहजयोग को नुकसान पहुँचा कर पैसा बचाने की आदत होती है। कुछ लोगों को सहजयोग को क्षति पहुँचा कर पैसा कमाने की आदत होती है। कुछ लोगों को उन्हें जो पैसा देना चाहिये वह न देने की आदत होती है, इत्यादि। यह छल–कपट के समान है। ये लोग शीघ्र सहजयोग से बाहर चले जाते हैं। भले ही शुरु में ये लोग बहुत बड़े नेता लगें, लेकिन वे देखते–देखते यों ही बाहर निकल जाते हैं। कई बार लोग मुझसे पूछते हैं कि आप पैसे का हिसाब–किताब (account) क्यों नहीं रखती हैं? परन्तु सहजयोग में मुझे कोई हिसाब–किताब (account) आदि रखने की जरूरत नहीं है, क्योंकि सहयोगी मेरे मुनीम हैं। अगर आप सहजयोग से चाल–बाजियां करने की कोशिश करते हैं, तो आपका नाभि चक्र क्षति ग्रस्त होता है और आप अपनी चेतना खो बैठते हैं, जो आपके साथ कभी नहीं हुआ होता। एक ओर आपने हजारों रुपये बनाए, किन्तु दूसरी ओर लाखों रुपये (सहजयोग की बहुमूल्य सम्पदा) खो बैठते हैं। आपको किसी भी प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ सकता है, जो मैं नहीं बता सकती। और फिर आप कहते हैं कि यह समस्या कैसे आई? अतः यदि आप अपनी साधना (seeking) में ईमानदार नहीं हैं तो नाभि चक्र की पकड़ आती है। साधना (seeking) की ईमानदारी का सिर्फ यह मतलब नहीं कि शब्दों में कह देना "मैं साधक हूँ" बल्कि इसका

यह अर्थ भी है कि आपका अपने प्रति और दूसरों के प्रति कैसा आचरण है। आपको अपने प्रति ईमानदार रहना चाहिए कि आप ध्यान (meditation) के लिए बैठें, अपना अन्तर–योग सुधारने की कोशिश करें और अपनी निर्विचार चेतना (thoughtless awareness) को बढ़ाएं। उस स्थिति को प्राप्त करने की कोशिश करें, जहां आप सचमुच ही निर्विचार अनुभव करें। इस ईमानदारी का मधुर रस मिलता है और अपने निजी अस्तित्व (being) अर्थात् आत्मा में आप उत्तरोत्तर ऊंचे और गहरे उतरते जाते हैं।

सर्वप्रथम आप मुझ पर निर्भर करते हैं कि "आखिर माताजी सब कुछ करेंगी। जब मैं माताजी के पास गया तो मेरा सहस्रार खुल गया। यह हुआ, वह हुआ।" लेकिन स्वयं ऐसा काम क्यों नहीं करते जो आपका सहस्रार खोलने में सहायक हो। तो सहस्रार का खुलना बहुत ही आवश्यक है।

आश्चर्य की बात है। ऐसी रचना है कि सहस्रार में ब्रह्मरन्ध्र एक ऐसे बिन्दु पर है जहां हृदय (अनहत) चक्र है। अतः यह जानना आवश्यक है कि ब्रह्मरन्ध्र का आपके हृदय से सीधा (direct) सम्बन्ध है। अगर आप सहजयोग को हृदय से न करके बाह्य रूप में (superficially) ही करेंगे, तो आप बहुत ऊंचे नहीं उठ सकते। मुख्य बात यह है कि आपको इसमें पूर्ण, हृदय देना है। जैसे कि कुछ लोग सहजयोग में आते हैं और पीछे बुड़बुड़ाते रहते हैं, "यह ऐसा होना चाहिए था, वह ऐसा होना चाहिए था" वगैरह–वगैरह। ऐसे लोगों को ईसा–मसीह ने "बुड़बुड़ाने वाली जीवात्माएं" (murmuring souls) कहा है। उन्होंने कहा था "इन बुडबुड़ाने वाली जीवात्माओं से सावधान रहो।" ऐसे सभी व्यक्ति जो पीछे बुडबुड़ाते हैं और फायदा उठाते रहते हैं, जैसे कि वे दूसरों को बचाने की कोशिश कर रहे हों, ऐसे लोग बहुत दुःख उठा सकते हैं। क्योंकि वे एक दोहरा छल कर रहे हैं। प्रभु के साम्राज्य में जब आप प्रवेश करते हैं तो यह दोहरा छल बहुत ही खतरनाक होता है। किसी भी राज्य के, किसी भी राज्य के अगर आप नागरिक हैं और आप उसके प्रति विश्वासघात करते हैं, तो आपको दण्ड मिलता है। लेकिन प्रभु के साम्राज्य में, यह इतना आनन्दमय है, पूर्णतया आनन्दमय, पूर्ण आशीर्वाद आप पर न्यौछावर कर दिये जाते हैं। पूर्णतया, हर सम्पदा– स्वास्थ्य, धन, मानसिक, भावनात्मक सभी प्रकार की सम्पदा आपको सहजयोग में प्राप्त होती है, निस्संदेह। लेकिन जब आप इतने सम्पन्न (blessesd) किये जाते हैं, तो आपको क्षमा भी प्रदान की जाती है, अनेक बार की जाती है और आपको बहुत

लम्बा अवसर प्रदान किया जाता है। किन्तु यदि आप नहीं संभलते तो आपका विनाश होता है, पूर्ण विनाश, आधा नहीं।

अतः वे लोग जो सोचते हैं कि वे सहजयोग से बेईमानी कर सकते हैं, बहुत सतर्क रहें। कृपया ऐसा न करें, अगर आप सहजयोग में रहना नहीं चाहते, तो अच्छा होगा आप चले जाएं, हमारे लिए और आपके लिए भी यही अच्छा है। क्योंकि अगर आप बेईमानी करते हैं, या छल–कपट करते है तो आप कष्ट भोगते हैं और फिर आप अजीब और हास्यास्पद (funny) लगते हैं। तो लोग कहने लगते हैं कि सहजयोग में क्या बुराई है? और हम बेमतलब भुगतेंगे (बदनामी के कारण) क्योंकि हम आपको दर्पण में नहीं दिखा सकते कि यह आदमी बहुत ही, बहुत ही ज्यादा विश्वासघाती रहा था। हम यह नहीं दिखा सकते कि यह आदमी बहुत ही, बहुत ही ज्यादा विश्वासघाती रहा था। हम यह नहीं दिखा सकते। इस प्रकार पहले हमें बदनामी मिलेगी और दूसरे इस तरह के आचरण से आपको भी हानि होगी। अगर आपको हानि हुई तो भी हमें बदनामी मिलेगी कि ऐसा कैसे हुआ? **लेकिन अगर आप सहजयोग और अपनी साधना (seeking) के बारे में ईमानदार हैं तो आप अनुमान नहीं लगा सकते कि भगवान आपकी कितनी देखभाल करते हैं। जो भी व्यक्ति आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश करेगा, वह बहुत हानि भोगेगा और उसे आपके रास्ते से हटा दिया जाएगा।** भगवान आपकी प्रत्येक बात में रक्षा करते हैं और पूरे चित्त से और पूरी सावधानी से आपकी देखभाल करते हैं। वे इतना प्रेम करते हैं कि उनकी दया का बखान शब्दों में नहीं किया जा सकता है। उसकी केवल अनुभूति की जा सकती है और वह समझा जा सकता है।

अब समस्या यह है कि जो लोग बेईमान होते हैं, वे अपने पूर्व संस्कार (background) की वजह से, कभी–कभी अपनी शिक्षा की वजह से, अपने पालन–पोषण (upbringing) की वजह से या कायरता की वजह से ऐसा करते हैं। एक और चीज जो आपको बेईमान बना सकती है वह है आपके पूर्वजन्मों के संस्कार और उसी के अनुसार आप जन्म लेते हैं और उसी के अनुसार आपकी कुण्डलिनी की अवस्था होती है।

लेकिन आत्मसाक्षात्कार के बाद जो लोग महान पुरुषार्थी और संकल्प वाले होते हैं इतनी प्रगति से ऊंचे उठते हैं कि तारों, ग्रहों, नक्षत्रों आदि की सारी समस्याएं लुप्त हो जाती हैं और आप एक 'सहजयोगी' बन जाते हैं अर्थात् एक नवजात, बिलकुल भिन्न व्यक्तित्व

(personality) जिसका अपने विगत जीवन से कोई सम्बन्ध नहीं होता, जिस प्रकार एक अंडे का एक सुन्दर पक्षी बन जाता है।

तो, जब यह कुण्डलिनी यहाँ पहुँच जाती है तो सहस्रार में प्रवेश पाने के मार्ग में सर्वप्रथम जो रुकावट आती है वह है एकादश रुद्र। ग्यारह संहार शक्तियाँ यहाँ होती हैं, पांच इस तरफ पाँच उस तरफ, और एक बीच में। हमारे द्वारा किये गये दो प्रकार के पापों से इन रुकावटों का निर्माण होता है। अगर हम अपना सिर गलत (मिथ्या) गुरुओं के आगे झुकाते हैं, उनके दुष्ट मार्ग को अपनाते हैं तो दाहिनी ओर की पांच रुद्र शक्तियों में खराबी आती है। अगर आप किसी ऐसे व्यक्ति के आगे झुके हैं जो गलत किस्म का व्यक्ति है और भगवान के विरुद्ध है तो दायीं ओर समस्या उत्पन्न हो जाती है। अगर आप यह सोचते है 'मैं अपनी देखभाल खुद कर सकता हूँ, मैं अपना गुरु स्वयं हूँ, मुझे कौन शिक्षा दे सकता है, मैं किसी को बात नहीं सुनना चाहता और मैं भगवान में विश्वास नहीं करता, भगवान कौन है? मैं भगवान की परवाह नहीं करता।' अगर इस प्रकार की भावनाएं आपके अन्दर हैं तो आपकी दायीं ओर नहीं, बल्कि बायीं ओर खराबी आ जाती है। क्योंकि आपका दायां भाग (पार्श्व, बाजू) घूम कर इधर (बायीं ओर) और बायां भाग दाहिनी तरफ आ जाते हैं। अतः ये दस चीजें और एक 'विराट विष्णु' का स्थान, क्योंकि हमारे पेट (stomach) में भी दस गुरुओं के स्थान हैं और एक विष्णु का स्थान है, इन सब में खराबी आ जाती है। तब साधना में भी गलती होती है और ये दस गुरु अपना स्थान त्याग कर देते हैं। तब आपको इस एकादश रुद्र की पकड़ हो जाती है। जब इस प्रकार की चीज आपके अन्दर आ जाती है, जैसे कि मैंने बताया, एक इस ओर (ईड़ा) और एक उस ओर (पिंगला), तो जिन लोगों ने गलत प्रकार के व्यक्तियों के आगे सिर झुकाया है, उनका ऐसा स्वभाव या ऐसा व्यक्तित्व बन जाता है जिससे कैंसर जैसी असाध्य (incurable) बीमारियों का आक्रमण हो सकता है। जिन लोगों ने गलत व्यक्तियों के आगे सिर झुकाया है उनको कैंसर या इस प्रकार की कोई भी बीमारी हो सकती है।

अब जो लोग सोचते हैं कि मैं किसी और से अच्छा हूँ, मैं भगवान की परवाह नहीं करता, मुझे भगवान नहीं चाहिए, मुझे इससे कोई मतलब नहीं, ऐसे लोगों के बायीं ओर के एकादश रुद्र की पकड़ भी अत्यधिक खतरनाक होती है क्योंकि ऐसे लोगों को शारीरिक रूप में दायीं ओर (पिंगला) की तकलीफें, जैस हृदय रोग, और दायीं ओर की अन्य प्रकार की तकलीफें हो जाती है।

अतः कुण्डलिनी के सहस्रार में प्रवेश पाने के विरुद्ध जो सबसे बड़ी रुकावट आती है, वह एकादश रुद्र है, जो भवसागर (void) से आता है, और जो 'मेघा' यानी मस्तिष्क के फर्श (plate) को ढकता है। इस तरह यह लिम्बिक (तालू) क्षेत्र (limbic area) में प्रवेश नहीं कर सकती। यहां तक कि वे लोग जो गलत गुरुओं के पास जा चुके हैं, अगर सही निष्कर्ष पर पहुँचें और सहजयोग के सम्मुख आत्म–समर्पण कर दें, अपनी त्रुटियों को स्वीकार करें, और कहें कि मैं स्वयं ही गुरू हूँ, तो वे ठीक हो सकते हैं। और जो लोग यह कहते हैं 'मैं ही सबसे बड़ा हूँ, मैं भगवान में विश्वास नहीं करता, मैं किसी भी ईश्वर के दूत (prophet) में विश्वास नहीं करता–ईश्वर के विरुद्ध या ईश्वर के दूत के विरुद्ध होना एक ही बात है–ईश्वर विरोधी व्यक्तित्व जो इस तरह की बात करते हैं, और इस लिये समस्याओं को निर्माण करते हैं, अगर वे अपने को विनम्र बनाएं और सहजयोग को, 'सुपर कौंशस' (super conscious) अर्थात मध्य मार्ग को, परमात्मा के साम्राज्य में प्रवेश पाने का एक मात्र मार्ग' के रूप में स्वीकार करें तो वे भी ठीक हो सकते है।

मैंने देखा है कि जो लोग तांत्रिक थे, बचा लिए गये हैं। मैंने देखा कि जो लोग सब प्रकार की गलत चीजें कर चुके थे, बचा लिए गये हैं। जो लोग विभिन्न संगठनों के सदस्य थे, बचा लिए गये हैं। लेकिन किसी को भी विश्वास दिलाना कि जो कुछ भी वे कर रहे हैं गलत काम है और उन्हें सही रास्ते पर आ जाना चाहिए, बहुत कठिन काम हैं।

अतः प्लूटों के विरुद्ध एक नक्षत्र उत्पन्न हुआ और यही नक्षत्र है जो कैंसर की बीमारी लाया है। क्योंकि प्लूटो नाम का नक्षत्र कैंसर की बीमारी को ठीक करता है, यही सब असाध्य बीमारियों के लिए हैं। अतः जो लोग अन्धाधुंध गलत मार्ग पर चलते जाते हैं, उन्हें अजीब तरह के हृदय–रोग, दिल–धड़कना (palpitation), अनिंद्रा (insomnia), उल्टियां, चक्कर आना, उल्टासीधा बकना, हो जाते हैं। गलत गुरु के पास जाना और उसके आगे सिर झुकाना बहुत ही गम्भीर बात है। इस प्रकार के आदमी के लिये सहस्रार में प्रवेश निषिद्ध हो जाता है। जो लोग सहजयोग के विरुद्ध हैं उनका सहस्रार बहुत ही कठोर (सख्त) होता है, एक बादाम या अखरोट के बाहरी खोल (nut) की भांति, जो तोड़ा नहीं जा सकता। अगर आप हथौड़ी का भी उपयोग करें तो भी आप नहीं तोड़ सकते।

आज समय आ गया है कि सहजयोग को पहचानना (मान्यता देना) आवश्यक है। आपको पहचानना ही पड़ेगा। आपने किसी संत, किसी पैगम्बर, किसी अवतार,

किसी को भी नहीं पहचाना। लेकिन आज तो यह शर्त है कि आपको पहचानना पड़ेगा। अगर आपने नहीं पहचाना, तो आपका सहस्रार नहीं खुलेगा, क्योंकि यही समय है जबकि सहस्रार खोला गया, और आपको अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना है। यह एक बहुत ही आवश्यक बात है कि आप सहजयोग को पहचानें। कई लोग ऐसे हैं जो कहते हैं, "माँ, सहजयोग में इस तरह क्यों विश्वास करें? हम बस आपको माँ पुकार सकते हैं, आप हमारी माँ हो सकती हो।" ठीक है। कोई बात नहीं। लेकिन आप आत्मसाक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते। और अगर आपने यह प्राप्त कर भी लिया तो आप इसे स्थायी नहीं रख सकते। आपको पहचानना पड़ेगा। पहचानना ही सहजयोग की पूजा है। अगर आप सहजयोग में भगवान को जानना चाहते हैं तो पहचानना ही पूजा है। सहजयोग में अन्य सभी गण, देवता, देवी, शक्ति एक ही हैं। और जो कोई भी सहजयोग को नहीं पहचानता, उन्हें (गण, देवता आदि को) उस व्यक्ति की परवाह नहीं, वह किस प्रकार का मनुष्य है। उदाहरणार्थ, एक आदमी जो शिवजी की पूजा करता है मेरे पास आया। और मैंने देखा कि उसका अनहत पकड़ा हुआ है। यह आश्चर्य की बात है। उसने कहा, "मां मै। शिवजी की पूजा करता हूँ, फिर मेरा अनहत कैसे पकडा हुआ है?" मैंने कहा, "तुम्हें सहजयोग को पहचानना पड़ेगा। शिवजी से प्रश्न पूछा तभी चैतन्य लहरियां (vibrations) आनी शुरू हो गईं। तो सहस्रार पर सहजयोग की पहचान कराने (मान्यता प्रदान कराने) का भार है, यह उसको सिद्ध करता है और विश्वास करवाता है। और अगर सिद्ध करने पर भी आप उसे पहचानते नहीं, तो आप आत्मसाक्षात्कार नहीं प्राप्त कर सकते।

लेकिन जो पहचानते भी हैं, वे आंशिक रूप में पहचानते हैं, वे अनधिकार स्वतन्त्रता लेते हैं। आचरण में यथोचित् आदर भाव, नम्रमा व संयम नहीं बरतते, वे हास्यास्पद प्रकार से व्यवहार करते हैं, यह नहीं समझते कि यहां पर यह महापुरुष जो हैं, वह कौन हैं? मैंने कई बार देखा है कि मैं भाषण दे रही होती हूँ और लोग हाथ ऊपर करके कुण्डलिनी चढ़ा रहे होते हैं या गप्पें मार रहे होते हैं। मुझे आश्चर्य होता है। क्योंकि अगर आपने पहचाना है, तो आपको पता होना चाहिए कि आप किसके सम्मुख खड़े हैं। क्योंकि यह मेरे फायदे के लिए नहीं हैं। मेरी इसमें कोई हानि नहीं होने वाली। बस यह केवल यह दर्शाता है कि अपनी उत्क्रान्ति में आपने पहचाना नहीं, मान्यता देने में असमर्थ रहे।

और जिस प्रकार कुछ लोग मुझपर एकाधिकार जमाते हैं, वह भी बिल्कुल गलत है। मुझ पर एकाधिकार जमाने की

कोई आवश्यकता नहीं। कोई भी मुझ पर अधिकार नहीं जमा सकता। कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं 'मां गलत समझी'। मुझे कभी भी गलतफहमी नहीं होती, सवाल ही पैदा नहीं होता। या कुछ लोग मुझे सलाह देते हैं, "यह कीजिए, वह कीजिए"। यह भी आवश्यक नहीं। अपने आपको इस मर्यादा (protocol) में ढालने की कोशिश करो, जो सहजयोग में बहुत ही आवश्यक है, और जिसे आज मैंने पहली बार ही बताया है, कि आप सम्पूर्णतया पहचानने की कोशिश करें। और अगर आप नहीं पहचानते, तो मुझे खेद है, मैं आपको आत्मसाक्षात्कार नहीं दे सकती जो कि स्थायी रहे। क्षणिक रूप से आप इसे पा सकते हैं किन्तु वह स्थायी नहीं होगा।

तो अपनी उच्च अवस्था को प्राप्त करने का सरलतम मार्ग है, आप शनैः–शनैः (धीरे–धीरे) पहचानें। मान्यता प्रदान करें। यदि किसी में कोई दोष या कमी है तो उसे वह बताना कठिन है, असम्भव है। सहजयोग में आने के बाद में यह बता सकती हूँ कि यह चक्र पकड़ा है, वह चक्र पकड़ा है। लेकिन, क्योंकि आपको यह ज्ञात है कि उक्त चक्र पकड़ने का क्या अर्थ है। आप फिर आते हैं और कहते हैं, "तो मैं आपको क्यों बताऊं कि आपका चक्र खराब है? आपको स्वयं ही अपने आपको स्वच्छ करना है, पूरी ईमानदारी से। लेकिन सर्वप्रथम आपको पूरी ईमानदारी से पहचानना है। एक बार आपने पहचान लिया, तो धीरे–धीरे आप वह सब कुछ करेंगे जो करना है, आप जान जाते हैं क्या करना है।

सहस्रार का सार समग्रीकरण (integration) है। सहस्रार में सारे चक्र स्थित हैं। अतः सब देवता/देवी का समग्रीकरण है। और आप उनके समग्रीकरण की अनुभूति कर सकते हो। अर्थात् जब आपकी कुण्डलिनी सहस्रार में पहुँच जाती है तो आपका मानसिक, भावात्मक और आध्यात्मिक व्यक्तित्व एक ही हो जाता है। आपका शारीरिक व्यक्तित्व भी इसी में विलय हो जाता है। तब आपको कोई भी समस्या नहीं रहती, जैसे कि "मुझे माँ से प्रेम है, किन्तु मुझे खेद है मुझे यह पैसा अवश्य चुराना है। मुझे पता है, मैंने माताजी को पहचाना है, मैं जानता हूँ कि वे महान हैं, लेकिन मैं कुछ नहीं कर सकता, मुझे झूठ बोलना ही पड़ेगा" या "मुझे यह गलत काम करना ही पड़ेगा क्योंकि अन्य कुछ उपाय नहीं।" मेरे साथ कोई समझौता नहीं हो सकता, आपके व्यक्तित्व का पूर्णतया समग्रीकरण आवश्यक है। अपने धर्मों को ठीक करना पड़ेगा। आप गलत काम करके और कहें कि मैं सहजयोगी हूँ, यह चल नहीं सकता।

लेकिन इसके लिए सामर्थ्य अन्दर से आती है। आपकी आत्मा आपको बल प्रदान करती है, आप बस अपनी संकल्प शक्ति लगाते हैं कि "हाँ, मेरी आत्मा कार्य करें" और आप अपनी आत्मा के अनुसार ही कार्य करने लगते हैं। और जहाँ आप अपनी आत्मा के अनुसार कार्य करने लगते हैं आप देखते हैं कि आप किसी चीज के दास नहीं है। आप समर्थ हो जाते हैं, अर्थात् (सम+अर्थ) अर्थ के समतुल्य; सम+अर्थ; समर्थ का अर्थ शक्तिशाली व्यक्तित्व भी है। तो आपका वह शक्तिशाली व्यक्तित्व बन जाता है जिसे कोई भी प्रलोभन नहीं होता, कोई भी असद्–विचार नहीं होता, कोई पकड़ नहीं होती, कोई समस्या नहीं होती।

स्वार्थी लोग केवल अपने आपको ही नुकसान पहुँचा रहे हैं, सहजयोग को नहीं। सहजयोग तो प्रस्थापित होगा ही। यदि इस नौका में दस आदमी ही हों, तो भी ईश्वर को परवाह नहीं। माँ होने की वजह से मुझे ही परवाह करनी पड़ती है। माँ होने की वजह से मैं चाहती हूँ कि इस नौका में अधिकतम लोग आएं। लेकिन एक बार नौका में सवार होने के बाद बेईमानी के काम करके वापस कूदने की कोशिश न करें।

अतः यह बहुत सरल है कि आप समग्र हो जाएं। समग्रीकरण से आपको वह शक्ति मिलती है जिससे आप जैसा समझते हैं तदनुसार कार्य करते हैं, और जैसा आप समझते हैं उससे आप प्रसन्न रहते हैं। तो आप ऐसी अवस्था में पहुँच जाते हैं जहां आप इस 'निरानन्द' को पाते हैं। और यह निरानन्द आपको मिलता है जब आप पूर्णतया आत्मा स्वरूप बन जाते हैं। निरानन्द अवस्था में कोई भेद–भाव नहीं रह जाता। यह अद्वैत है। 'एक' व्यक्तित्व होता है। अर्थात आप पूर्णतया समग्र हो जाते हैं और आनन्द में कहीं न्यूनता (अपूर्णता) नहीं रहती। वह सम्पूर्ण होता है। इसमें प्रसन्नता या दुःख के पहलू नहीं होते, बल्कि यह बस 'आनन्द' होता है। आनन्द का अर्थ यह नहीं कि आप ठहाका मार कर हँसें या मुस्कराते रहें। यह निस्तब्धता (stillness) आपके अन्तरतम का विश्राम भाव (quietitude), शान्ति (peace) आपके व्यक्तित्व की, आपकी आत्मा की जो चैतन्य लहरियों के रूप में स्फुरित होती हैं, जिनकी आपको अनुभूति होती है। जब आपको उस शान्ति की अनुभूति होती है तब आप अपने को सूर्य के प्रकाश के समान अनुभव करते हैं, उस सौन्दर्य की छटा चारों ओर बिखरती रहती है।

किन्तु पहले हम अपने निजी, स्वार्थी, मूर्ख कल्पनाओं से भयभीत होते हैं। उनको फेंक दो। वे हम पर छायी होती हैं क्योंकि हम असुरक्षित थे और क्योंकि

हमारे गलत विचार थे। उन्हें फेंक दो। ईश्वर के साथ एकरूप होकर खड़े रहो। आप पाओगे कि ये सब भय व्यर्थ थे। हमारी शुद्धता बहुत आवश्यक है। यह शुद्धता तब आती है जब आप सहजयोग में बताई विधि के अनुसार वास्तव में शुद्धिकरण करें।

मैं कहूँगी सहस्रार दैव (ईश्वर) का आशीर्वाद है। यह ऐसे सुन्दर रूप से क्रियान्वित हुआ है। सहस्त्रार बेधना बहुत कठिन कार्य है। और जब मैंने सचमुच इसे बेधा तो मुझे पता नहीं था कि यह कार्य इतना सफल होगा। पहले मैंने सोचा कि यह उचित समय से पहले हो गया। क्योंकि कई राक्षस अभी भी गलियों में अपना माल बेच रहे हैं और कई ऐसे ध र्मान्ध लोग भी हैं जो तथाकथित धर्म के नाम की दुहाई देते हैं किन्तु वास्तव में उनके जो क्रिया–कलाप हैं वे वास्तव में आत्मा के धर्म नहीं हैं। लेकिन धीरे–धीरे हमने अपनी जड़ें जमा ली हैं। अब आओ सहस्रार के मध्य से इस सत्य को अपने अन्दर जड़ें जमाने दो। और जब यह सत्य उस प्रकाश में बदल जाय जो आपका मार्गदर्शन करता है, ऐसा प्रकाश जो आपका पोषण करता है, ऐसा प्रकाश जो आपको प्रदीप्त करता है और आपको एक ऐसा व्यक्तित्व प्रदान करता है जिसमें प्रकाश है, तभी आपको समझना चाहिए कि आपका सहस्त्रार आपकी आत्मा द्वारा पूर्णतया प्रज्जवलित हो गया है। आपका मुखमंडल ऐसा होना चाहिए कि लोग जानें कि यह जो व्यक्तित्व सामने खड़ा है वह प्रकाश है। इसी प्रकार सहस्रार की देखभाल करनी है।

सहस्रार की देखभाल करने के लिए यह बहुत जरूरी है कि आप सर्दियों में अपना सिर ढकें। सर्दियों में सिर ढकना अच्छा है ताकि मस्तिष्क ठण्ड से ना जमे, क्योंकि मस्तिष्क भी मेघा (fat) का बना होता है। और फ़िर मस्तिष्क को बहुत ज्यादा गर्मी से भी बचाना चाहिए। अपने मस्तिष्क को ठीक रखने के लिए, आपको हर समय धूप में ही नहीं बैठे रहना चाहिए, जैसा कि कुछ पाश्चात्य लोग करते हैं। उससे आपका मस्तिष्क पिघल जाता है और आप एक सनकी मनुष्य बन जाते हैं, जो इस बात का संकेत है कि आपके कुछ समय बाद पागल होने की सम्भावना है। अगर आप धूप में भी बैठें तो अपना सिर ढके रखें। सिर ढकना बहुत आवश्यक है। लेकिन सिर को कभी–कभी ढकना चाहिए, हमेशा नहीं। क्योंकि अगर आप हमेशा ही सिर पर एक भारी पट्टा बांधे रहें तो रक्त का संचार ठीक प्रकार से नहीं होगा और आपके रक्त संचार में तकलीफ होगी। अतः केवल कभी–कभी (हमेशा नहीं) सिर को सूर्य अथवा चन्द्रमा के प्रकाश में खुला रखना उचित है। नहीं तो आप चांद के प्रकाश में अत्यधिक बैठे

तो पागलखाने पहुँच जाएंगे। मैं जो कुछ भी बताती हूँ, आपको समझना चाहिए कि सहजयोग में किसी भी चीज में 'अति' ना करें। यहां तक कि पानी में भी लोग तीन–तीन घंटे तक बैठे रहते हैं। मैने ऐसा कभी नहीं कहा। सिर्फ दस मिनट के लिए आपको पानी में बैठना है, किन्तु वह पूरे हृदय से। अगर मैं उनसे कुछ करने को कहती हूँ तो वे चार घंटे तक करते रहेंगे। इसकी कोई आवश्यकता नहीं। केवल दस मिनट के लिए कीजिए।

अपने शरीर को भिन्न–भिन्न प्रकार के अनुभव, उपचार (treatment) दीजिए, हमेशा एक ही व्यवस्था नहीं। इस तरह तो आपका शरीर नीरस (bored) हो जाएगा या बोझल (over burdened) अनुभव करेगा। अगर आप किसी को बताएं कि आपके लिए यह मन्त्र है तो इसे तभी तक प्रयोग करना चाहिए जब तक कि आप इस चक्र की बाधा से छुटकारा न पा लें। उसके पश्चात् नहीं। मान लीजिएं इस जगह एक पेंच लगाना है। तो आप इसको तभी तक घुमाएंगे जब तक कि यह मजबूती से न गड़ जाए। आप इसको गड़ने के बाद भी घुमाते नहीं जाते। क्या आप इसको लगातार घुमाते ही चले जाएंगे ताकि सारी चीज बिगड़ जाए? अच्छा है कि आप सदबुद्धि, विवेक का प्रयोग करें। और इस सदबुद्धि के लिए आपको श्री गणेश या ईसामसीह को जानना चाहिए।

ईसामसीह, जो सिर के दोनों तरफ हैं, यहां (पीछे) महागणेश हैं और यहां (सामने माथा) ईसामसीह हैं। दोनों आपकी दृष्टि ठीक करने में आपकी सहायता करते हैं और आपको समझदारी व सदबुद्धि प्रदान करते हैं। तो सदबुद्धि किसी चीज से चिपकने में नहीं है। सहजयोगी चिपकने वाले लोग नहीं हैं। अगर वे चिपक जाते हैं तो समझ लो वे उन्नति नहीं कर रहे हैं। आपको विचारों (ideas) से नहीं चिपकना चाहिये और न व्यक्तियों से चिपकना चाहिये। आपको हमेशा गतिमान रहना चाहिये, इसका यह मतलब नहीं कि इस गतिशीलता में आप कहीं गिर जाएं और सोचें "अरे, हम तो बहुत उन्नति कर रहे हैं क्योंकि हम गिर रहे हैं।" आपको ऊंचा उठना है, गिरना नहीं है।

तो जब आप सहजयोग में कुछ प्राप्ति कर रहे हैं तो आपको सर्वप्रथम देखना चाहिए कि आपका स्वास्थ्य ठीक रहे, आपका मस्तिष्क सुचारू (normal) रहे, आप एक सामान्य (normal) व्यक्ति हों। **अगर आप अभी लोगों पर भौंकते हैं (अप्रिय बोलते हैं) तो आपको यह जान लेना चाहिए कि आपमें कुछ दोष है। या आप मन में उदास, उद्विग्न और अकारण कुपित होते या आपकी मनःस्थिति बिगड़ती है तो आप समझ लें कि आप अभी सहजयोगी नहीं हैं।** आप अपने आप की जांच कर सकते हैं।

अगर आप एक पक्षी की तरह स्वच्छन्द (tree) हैं तो ठीक है। लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि आप सड़क पर चिड़िया की तरह गाते फिरें या पेड़ों पर फुदकते फिरें। एक मूढ़ आदमी के सामने मैं कोई भी उपमा दूं वह अत्यन्त मूर्खता पूर्ण आचरण करेगा। लेकिन वही एक सद्बुद्धिमान के सामने देने से वह उसका सही उपयोग करेगा। तो यह समझना चाहिए कि सहजयोग विवेकी मनुष्यों द्वारा विवेक पूर्वक जाना जाता है।

सहजयोग में होता क्या कि है आप एक चीज को दृढ़ता पूर्वक पकड़ लेते हैं। वह चीज है आपकी आत्मा और आपका सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक पतंग की तरह विचरण करता है, **जैसे एक पतंग हरेक चीज के ऊपर उड़ती फिरती है। आप एक ही चीज से चिपके रहते हैं, वह है आपकी आत्मा। अगर आप सचमुच ऐसा कर सकें, यथार्थ में और ईमानदारी से, पैसा परिवार और अन्य सांसारिक वस्तुओं के बारे में अधिक चिन्ता किए बिना, तो आप सहजयोग में सफल है।** इनके बारे में बस चिन्ता न करें, आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं। बस बन्धन दीजिए। अगर ऐसा नहीं हो पाता तो आपका सहजयोग समाप्त। अगर हो जाता है तो बहुत अच्छा। आपकी व्यक्तिगत इच्छा का महत्व नहीं, प्रभु की इच्छा का महत्व है–प्रभु आपकी जैसी इच्छा हो वही हो (Thy will be done)। आप कहें प्रभु आपकी जैसी इच्छा हो। और कैसा आश्चर्य है कि आपकी इच्छाएं बदल जाती हैं, आपके संकल्प बदल जाते हैं और जो कुछ भी आप कहते हैं वही हो जाता है। लेकिन जब ऐसा हो जाता है तो लोगों में अहंकार उत्पन्न हो जाता है। अतः सतर्क रहें। यह सब 'शक्ति' द्वारा किया जाता है, आपके द्वारा नहीं। आपकी 'आत्मा' द्वारा, आप द्वारा नहीं। आपको आत्मा होना है। और जब आप आत्मा हो ही जाते हैं तो आप अकर्म में होते हैं, जहां आप जानते नहीं कि आप कर रहे हैं, बस हो जाता है, आप अनुभव नहीं करते, आप अवगत नहीं होते।

इन सब भाषणों के बाद, आप के ज्यादातर चक्र खुल गए होंगे। लेकिन यह सब 'मेरा' कार्य है। अब आपको भी कुछ घर जाकर काम (home work) करना है। आपको भी अभ्यास करना है और अपने आपको देखना है। सावधान रहो। अपने आपको दर्पण में देखने और अपना सामना करने की कोशिश करो। आप देखें आप कितने ईमानदार रहे हैं, आप कितने शुद्ध रहे हैं, सामूहिकता में आप कितने मित्रता पूर्ण हैं, जो सहजयोग में बहुत महत्व रखता है। अगर आप सामूहिक नहीं हैं, अगर आप अकेले या हास्यास्पद हैं, अगर आप दूसरों से विचार संचार नहीं

(communicate) कर सकते, तो समझ लें कि कुछ गड़बड़ है। और तब आप अपने आपका सामना करें (अपने को जांचें) और अपने आपको ठीक करने की कोशिश करें। जैसे एक साड़ी को उतार कर साफ किया जाता है। आप अपने को अपने 'स्व' से अलग करके साफ करें। इसी प्रकार सहजयोगी प्रगति करेंगे। जब कुछ सहजयोगी ऊँचे उठेंगे तो और अनेक उनसे प्रभावित होंगे और ऊँचे उठेंगे। इस प्रकार सब सहजयोगी समुदाय बहुत तीव्रता से ऊँचे उठ सकता है। लेकिन तुम लोग जो ऊँचे उठ रहे हो, और ज्यादा उन्नति करो, बिना अपनी उन्नति के बारे में सोचते हुए। यह बहुत आवश्यक है।

जो लोग सोचते हैं कि दूसरे लोग उनसे ऊँचे हैं वे भी गलत सोचते हैं, क्योंकि ऐसी बात नहीं है। समस्त ही ऊंचा उठ रहा है। कोई इस प्रकार अपने को निम्न न समझे या अपमानित अनुभव न करे, कि कोई उन्हें निम्न समझता है। औरों को सोचने दो उससे क्या होता है, भगवान तो ऐसा नहीं सोचता। तो ये छोटी–छोटी बातों से आप सतर्क रहें। इस कृतयुग में आत्मसाक्षात्कार का चरम लक्ष्य प्राप्त करना बहुत ही आसान है।

मैं सोचती हूँ कि मैंने सहस्रार के बारे में बहुत कुछ बताया है। अगर आपकी कोई समस्या है तो आप अभी पूछ लें। लेकिन सिर्फ सहस्रार के बारे में, और किसी के बारे में नहीं। अच्छा होगा कि आप मेरे से अन्य विषय के बजाय सिर्फ सहस्रार के बारे में ही प्रश्न पूछें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

संक्रान्ति पूजा (2001)

प्रतिष्ठान पुणे

अत्याधिक कर्मकाण्ड करने वाले लोग जल्दी से परिवर्तित नहीं होते। हमें अपने स्वभाव परिवर्तित करने चाहिए। उत्तर भारत में कर्मकाण्ड इतने अधिक नहीं हैं। वे लोग गंगा में स्नान करते है परन्तु अब उनमें बहुत बदलाव आया है। बहुत से सुशिक्षित लोग सहजयोग में आए हैं और उन्हें देखकर आश्चर्य होता है।

महाराष्ट्र में बहुत से साधु संत हुए जिन्होंने बहुत परिश्रम किया। परन्तु उसका कोई उपयोग नहीं हुआ। सारा जीवन कर्मकाण्ड में चला गया। परन्तु अब परिवर्तन होना चाहिए और हम सबको जागृत होना चाहिए। भोर हो गई है, अब सोने का क्या अर्थ है?

महाराष्ट्र की स्थिति देखकर बहुत दुख होता है। यहाँ पर लोग इतना कार्य कर गए फिर भी लोगों को सहजयोग में उतरना चाहिए और वह आनन्द दूसरों को देने की योग्यता भी होनी चाहिए।

मैं स्वयं महाराष्ट्र से हूँ। यहाँ बहुत से दुष्ट लोग भी हुए जिन्होंने सब बर्बाद कर दिया। आप लोगों को विशेष वरदान प्राप्त हैं, आप युवा हैं और बहुत कुछ कर सकते है।

महाराष्ट्र के लोगों को यदि कहा जाए कि तप करो, उपवास करो पति–पत्नी का त्याग करो तो वे ये सब करेंगे। परन्तु भक्ति तपस्या से कहीं श्रेष्ठ है। भक्ति आनन्द का स्रोत है। सहजयोग अपनाने वाले लोगों को न कोई तपस्या करनी है न कुछ त्यागना है। जहाँ हैं वहीं पर सब कुछ पाना है। आत्मसाक्षात्कार अन्य लोगों को भी देना चाहिए नहीं तो आत्मसाक्षात्कार का क्या लाभ है? तपस्वी लोग देना नहीं जानते। अपनी भक्ति से आप सबकुछ दे सकते हैं।

भक्ति में भी कुछ छोड़ना त्यागना नहीं होता। केवल हृदय से प्रार्थना करनी होती है कि, "मैं अपना पूरा जीवन सहजयोग के लिए समर्पित करता हूँ।" न कुछ छोड़ना है न तपस्या करनी है। आपमें इतनी भक्ति होनी चाहिए कि वह प्रसारित हो और लोगों में प्रज्जवलित हो, फिर देखें कैसा आनन्द आता है। **सहज को यदि आपने अपने तक ही सीमित कर लिया तो आनन्द शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। आनन्द को यदि बढ़ाना है तो दूसरे लोगों में इसे बाँटे। अपने तक सीमित रखने में कोई विशेष बात नहीं है।**

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।